R.N.I.Regd.No.:RAJHIN/2005/16223
Postal Regd.No.:JAIPURCITY/107/2022-24

कृषि, सहकारिता, पशुपालन व ग्रामीण विकास का अग्रणी साप्ताहिक समाचार पत्र

हलधर टाइम्स

प्रत्येक सोमवार को प्रकाशित

www.haldhartimes.com

@8

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO
हलधर टाइम्स
सी-17, पुरोहित जी का बास,
सरकारी मिडिल स्कूल के पास,
22 गोदाम, जयपुर-302006

लक्ष्य से 49 फीसदी रबी फसलों की बुवाई | @3 मूल्य : ₹ 5/- पृष्ठ : 8 जयपुर | वर्ष-19, अंक-51 | 18 नवम्बर - 24 नवम्बर, 2024 (वार्षिक मूल्य : ₹250/-)

हलचल

काउंसलिंग 25 से

जयपुर। राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर के द्वारा कृषि अनुसंधान अधिकारी और सहायक कृषि अनुसंधान अधिकारी भर्ती-2022 की विचारित सूची में शामिल अभ्यर्थियों की काउंसलिंग 25 नवंबर से शुरू की जाएगी। इसके लिए आयोग ने कार्यक्रम जारी कर दिया है। आयोग की संयुक्त सचिव ऋषि बाला श्रीमाली ने दी।

21 के बाद का रेग्यूलेशन तैयार

हनुमानगढ़। जल परामर्शदात्री समिति की बैठक में इंदिरागांधी नहर के रेग्यूलेशन पर चर्चा की गई। जंक्शन के जल संसाधन विभाग कार्यालय में हुई बैठक में 21 नवम्बर के बाद का रेग्यूलेशन तैयार किया। चर्चा के बाद इंदिरागांधी नहर में आगे तीन में एक समूह की दो बारियां और चलाने पर सहमति बनी। इसके बाद जनवरी में फिर समीक्षा बैठक करके आगे का रेग्यूलेशन तैयार करने का सुझाव दिया गया।

राजुवास में कॉसलिंग प्रक्रिया जारी

बीकानेर। राजस्थान पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय के संघटक और सम्बद्ध वेटरनरी कॉलेजों में उपलब्ध 32 रिक्त सीटों पर बी.वी.एस.सी. एण्ड ए.एच. डिग्री पाठ्यक्रम (सत्र 2024-25) में प्रवेश आवंटन के लिए द्वितीय ऑफलाईन काउंसलिंग बीकानेर वेटरनरी कॉलेज में जारी है। चेयरमैन स्नातक प्रवेश मण्डल प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए विश्वविद्यालय के अभ्यर्थीयों को उनके नीट (यू.जी.) 2024 की मेरिट, ऑनलाईन काउंसलिंग रजिस्ट्रेशन फार्म में चुने महाविद्यालयों और आरक्षित कोटे के आधार पर प्रमाण-पत्र जांच और फीस जमा करवाने की प्रक्रिया की गई। विस्तृत जानकारी विश्वविद्यालय के वेबसाईट पर उपलब्ध है।

पाठक बने पत्रकार

हलधर टाइम्स के पाठक खेती / पशुपालन से जुड़ी समस्या, फोटो, जानकारी व्हाट्सएप के इन नम्बरों पर भेजें।

9828165521
7976452840
www.haldhartimes.in

अनूठा शोधः प्रोबायोटिक पर दुनिया का पहला शोध एमपीयूएटी के नाम

मक्का राबड़ी से तैयार किया पाउड़र

पारम्परिक खाद्य उत्पादों को देसी-विदेशी बाजार मिलने की बधी उम्मीद

पीयूष शर्मा

जयपुर। प्रदेश में राबड़ी को लेकर कई कहावते बोली और सुनी जाती है। लेकिन, पोषकता से भरपूर राबड़ी वैज्ञानिक शोध से अछूती रही। यही कारण है कि विदेशी खाद्य उत्पादों का स्वाद तो हमारी जुबान पर चढ़ गया। लेकिन, घर का जोगी जोगाणा के जैसे राबड़ी का स्वाद घर और गांव गलियारों तक ही सीमित रहा। लेकिन, अब राबड़ी देसी-विदेशी उपभोक्ताओं का जायका बदलेगी। जी हां, सच यही है। जयपुर जिले के एक लाल ने राबड़ी को रेडी टू ईट फूड़ की शक्ल में तैयार कर दिखाया है। इससे राबड़ी ना केवल राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में डिब्बाबंद होकर बिक्री होगी। वहीं, मेक इन इंड़िया मुहिम को सात समंदर पार भी मजबूती देगी। गौरतलब है कि घरों में बनाई जाने वाली मक्का की राबड़ी 24 घंटे में अपना स्वाद बदल देती है। लेकिन, यह राबड़ी 6 महीने तक खराब भी नहीं होगी। दरअसल, मक्का की राबड़ी अब पाउड़र की शक्ल ले चुकी है। राबड़ी को को रेड़ी टू ईट फूड के रूप में तैयार करने का काम किया है डॉ कमलेश मीणा ने। जयपुर जिले के महारकलां गांव के साधारण किसान परिवार से ताल्लुक रखने वाले डॉ. मीणा ने मक्का की राबड़ी पर ही अपना शोध कार्य पूरा किया है। इससे अब राजस्थानी राबड़ी का जायका देसी-विदेशी उपभोक्ताओ की जुबान पर चढ़ाने में आसानी होगी। क्योंकि, अब तक देसी-विदेशी पावणों को राजस्थान आने पर ही राबड़ी का स्वाद चखने को मिलता है। गौरतलब है कि राजस्थान के मक्का उत्पादक जिलों में मक्का से कई उत्पाद तैयार किए जाते है। जिनमें मक्का की राबड़ी (दलिया, जिसे घाट भी कहते है), नमकीन राब(साजिया), पापड़ और ढोकला सहित कई दूसरे खाद्य उत्पाद शामिल है। इन उत्पादों को विशेष तौर पर सर्दी के मौसम में घरों में बनाया और खाया जाता है। मौसम बदलने के साथ ही दूसरे अनाज की राबड़ी का उपयोग शुरू हो जाता है। हालांकि, मॉर्डन फूड कल्चर के चलते गांवों तक सिमटी रहने वाली मक्का, बाजरा और जौ की राबड़ी अब फाइव स्टार होटलों के मैन्यू में शुमार हो चली है। क्योंकि, यह पोषक गुणों से भरपूर होती है। वहीं, सुगमता से पच भी जाती है। राबड़ी की इस विशेषता

को देखते हुए डॉ. कमलेश ने विद्यावाचस्पति के दौरान इस पर शोध कार्य शुरू किया और मक्का का राबड़ी पाउड़र तैयार करने में सफल भी रहे। उन्होंने बताया कि इस शोध उद्धेश्य पारंपरिक खाद्य पदार्थों में नए प्रोबायोटिक संभावनाओं को खोजने का प्रयास और पारंपरिक मक्का आधारित राबड़ी में उपस्थित प्रोबायोटिक बैक्टीरिया की पहचान और उनके स्वास्थ्य लाभकारी गुणों का परीक्षण था। गौरतलब है कि डॉ. मीणा ने अपना शोध कार्य राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता- प्रबंधन संस्थान (एनआईएफटीईएम) सोनीपत-हरियाणा के खाद्य वैज्ञानिकों के सहयोग से पूरा किया है। जबकि, वर्तमान में डॉ. मीण एमपीयूएटी उदयपुर के डेयरी-खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

गर्म पानी में मिलाएं और खाएं

उन्होंने बताया कि मक्का आधारित राबड़ी को पाउड़र की शक्ल में तैयार करने से राबड़ी का स्वाद लेना अब काफी आसान हो चुका है। इसके लिए राबड़ी पाउड़र को केवल गर्म पानी में घोलने की जरूरत उपभोक्ताओं को रहेगी। इससे भी ठीक वैसा ही स्वाद मिलेगा, जैसा स्वाद घरो में बनने वाली ताजा राबड़ी से मिलता है। बड़ी बात यह है कि राबड़ी पाउड़र 6 महीने तक खराब नहीं होगा। इससे हर मौसम में राबड़ी का स्वाद लेना संभव होगा।

स्प्रे ड्राइंग तकनीक का उपयोग

उन्होने बताया कि मक्का राबड़ी को पाउड़र की शक्ल देने के लिए स्प्रे ड्राइंग तकनीक का उपयोग किया है। इस तकनीक से ही उच्च गुणवत्ता वाला मक्का आधारित प्रोबायोटिक राबड़ी पाउडर तैयार हुआ है। उन्होंने बताया कि उत्पाद के उपयोगी अवयवों और स्प्रे ड्राइंग तापमान का सही संतुलन ढूंढने के लिए रेस्पॉन्स सरफेस मेथडोलॉजी का उपयोग किया गया। जिससे उत्पाद की गुणवत्ता में बढ़ोतरी हुई। शोध में तैयार मक्का आधारित प्रोबायोटिक राबड़ी पाउडर का शेल्फ लाइफ परीक्षण विभिन्न तापमानों पर किया गया। 4डिग्री सेल्सियस तापमान पर भी 49 दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है, जो इसे व्यावसायिक दृष्टिकोण के हिसाब से उपयोगी बनाता है।

प्रोटीन से भरपूर

उन्होने बताया कि तैयार पाउडर में उच्च प्रोटीन, कम नमी और बेहतरीन पुनर्घुलन क्षमता जैसी गुण है। उत्पाद में उच्च एंटीऑक्सीडेंट क्षमता और खनिज तत्वों की प्रचुरता है, जो इसे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी बनाते हैं। उन्होंने बताया कि इस पाउड़र का उपयोग डायरिया और रक्तचाप के रोगियों के लिए भी लाभकारी है।

अनाज आधारित खाद्य से लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया की खोज

उन्होंने बताया कि शोध के दौरान राजस्थान में पारम्परिक रूप से बनाए जाने वाले अनाज आधारित खाद्य पदार्थो से 76 लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया की पहचान की गई। फिर इनमें से 6 लाभकारी प्रोबायोटिक गुणों का परीक्षण किया गया। साथ ही, डीएनए विश्लेषण करवाया गया। इन सबको एनसीबीआई-यूएसए में प्रस्तुत करके पंजीयन करवाया गया। इनमें से लैक्टिप्लांटिबैसीलस प्लांटारम केएमयूडीआर-7 लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया को सबसे ज्यादा उपयोगी और फायदेमंद पाया गया। इसके बाद कुछ दूसरे खाद्य पदार्थो के उपयोग से मक्का राबड़ी का पाउड़र की शक्ल दी गई। गौरतलब है कि डॉ. कमलेश का इस शोध फरमनटेशन, डिस्कवरी फूड सहित 4 अन्तर्राष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हुआ है। साथ ही, इन्होंने फूड और डेयरी माइक्रोबायोलॉजी, जैव-प्रौद्योगिकी पर कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं।

एसएनपी चिप देश में पहली बार तैयार की गई

खेती-किसानी को स्मार्ट बनाएगी एआई तकनीक

प्रदेश के 18 ब्लॉक में शुरू होगा पायलट प्रोजेक्ट

जयपुर। खेती-किसानी से जुड़े कामों को आसान बनाने के लिए राज्य सरकार अब किसानो को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक (एआई) से जोड़ने जा रही है। तकनीक की सफलता को लेकर पायलट प्रोजेक्ट का रोडमैप तैयार हो चुका है। जल्द ही, चुनिंदा ब्लॉक में यह पायलट प्रोजेक्ट शुरू होने जा रहा है। इस प्रोजेक्ट के जरिए किसानों को वे कैसे उन्नत खेती कर सकते हैं, खेती में क्या-क्या नवाचार कर सकते हैं। खेत में कितना उत्पादन होगा, जैसी कई जानकारियां एआई के जरिए बताई जायेगी। गौर करने वाली बात यह है कि किसानों को कृषि संबंधित तमाम जानकारियां प्राप्त करने के लिए घर से बाहर जाने की जरूरत भी नहीं होगी। किसान घर बैठे अपने स्मार्टफोन के माध्यम से कृषि से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त कर सकेगा। गौतरतलब है कि राज्य सरकार 'एआई तकनीक समाधान' नाम से पायलट प्रोजेक्ट शुरू करने जा रही है। इसमें प्रदेश के 18 ब्लॉक के 7 हजार किसानों को जोड़ा जाएगा। पायलट प्रोजेक्ट के तहत चयनित ब्लॉक में सफलता के बाद इसे पूरे प्रदेशभर में लागू किया जाएगा और सभी किसानों को जोड़ा जाएगा।

विशेषज्ञ की लेंगे मदद

किसानों को एआई तकनीक से जोडने के लिए सरकार एआई विशेषज्ञों से जुड़ी कंपनियों की मदद लेगी। सरकार की ओर से इसकी टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। कंपनी द्वारा जीपीएस तकनीक से किसानों को जोड़ा जाएगा। एक साल तक कंपनी और फर्मो से जुड़े एआई कृषि विशेषज्ञ चयनित किसानों को जानकारी देंगे। इसमें सबसे ज्यादा मदद किसानों को किस फसल में कितना और कब पानी देना है, इस बारे में मिलेगी। कंपनी को भुगतान एक साल बाद किया जाएगा।

स्मार्ट किसानों को लाभ

योजना में स्मार्ट फोन का उपयोग करने वाले किसानों को जोड़ा जाएगा। किसानों को सरकार की ओर से चयनित कंपनी द्वारा विभिन्न मोबाइल एप एवं सॉफ्टवेयर के माध्यम से जोड़ा जाएगा। समय-समय पर मौसम, जल प्रबंधन, पानी की मांग, फसलों में पोषक तत्वों समेत महत्वपूर्ण जानकारियां मुहैया करवाई जाएगी।

पायलट प्रोजक्ट में यह शामिल

एआई तकनीकी समाधान में कोटा, बारां, झालवाड़, पीसांगन, कोटपूतली, दौसा, आमेर, गोविंदगढ़, राजगढ़, धौलपुर, सेपऊ, हिंडौन, खंडार, सवाईमाधोपुर, शाहपुरा, चित्तौडगढ़, राजसमंद, खेतड़ी, नीम का थाना, हनुमानगढ़, जैसलमेर ब्लॉक को भी शामिल किया गया है।

राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र, बीकानेरः एसएनपी चिप देश में पहली बार तैयार की गई

अश्वशक्ति के साथ इतिहास बतायेगी स्वदेशी चिप

जयपुर। स्वदेशी नस्ल के घोड़ों की शक्ति और इतिहास अब पशुधन वैज्ञानिकों के लिए दूर की कौड़ी नहीं रहा है। इस कार्य को सहज, सरल और सुगम बनाने का काम किया है राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र ,बीकानेर के वैज्ञानिकों ने। केन्द्र के वैज्ञानिकों ने दो साल मेहनत से एक चिप विकसित की है, जिससे स्वदेशी घोड़ों की डीएनए बेस्ड एक्सिओ सामने आ जायेगा। केंद्र के वैज्ञानिकों का दावा है कि स्वदेशी घोड़ों की डीएनए बेस्ड एक्सिओ अश्व एसएनपी चिप देश में पहली बार तैयार की गई है। नई विकसित इस चिप से स्वदेशी नस्ल के घोड़ों

के बारे में ज्यादा गहनता से अध्ययन किया जा सकेगा। अब तक विदेशी घोड़ों की डीएनए जांच चिप से ही आनुवांशिक अध्ययन करते थे। इस चिप के विकास में राष्ट्रीय पशु संसाधन ब्यूरो करनाल के वैज्ञानिकों का भी सहयोग महत्वपूर्ण रहा है।

घोड़ों के डीएनए पर अध्ययन

इस चिप को तैयार करने के लिए वैज्ञानिकों ने 100 से अधिक घोड़ों के डीएनए पर अनुसंधान किया। इसमें मारवाड़ी, काठियावाड़ी, मणिपुरी झांसकारी, स्पीति और भुटिया नस्ल के घोड़े शामिल रहे। एक विदेशी नस्ल थोरब्रेडस के घोड़े को भी शामिल किया गया। सभी की डीएनए जांच कर चिप तैयार की गई। इसके लिए 6 लाख 13 हजार 950 डीएनए मार्कर डाले गए। इससे 94.4 प्रतिशत तक सफल परिणाम सामने आए है। डीएनए चिप से घोड़ों की नस्लों का वर्गीकरण के साथ उनके उत्पादन एवं खासियत का पता लगेगा।

इन वैज्ञानिकों ने तैयार की चिप

इस चिप को तैयार करने में दो साल का समय लगा। टीम में राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र के प्रभागाध्यक्ष डॉ. एससी मेहता के साथ सोनिका अहलावत, साकेत कुमार निरंजन, रीना अरोड़ा, रमेश कुमार विज, अमोद कुमार, उपासना शर्मा, मिनल रहेजा, कनिका पोपली, सीमा यादव शामिल रहे।

इस चिप से स्वदेशी घोड़ों की डीएनए जांच कारगर साबित होगी। इससे घोड़ों के दौड़ने की गति, कार्य क्षमता, घोड़ों की चाल, ताकत नस्लों की कुंडली का पता चल सकेगा। साथ ही, मजबूत और ताकतवर घोड़ों का चयन करना भी आसान हो जाएगा। अब विदेशी चिप पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

डॉ एससी मेहता, प्रभागाध्यक्ष, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र, बीकानेर

पुष्कर के एक कार्यक्रम में बोले उपराष्ट्रपति

किसान समाज की आत्मा

जयपुर। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड ने कहा कि किसान समुदाय को बाँटने की साजिश करने के प्रयासों को सब मिलकर रोक सकते हैं। किसान समाज की आत्मा है। किसान के बिना समाज की कल्पना मुश्किल है। वे पुष्कर में आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि अन्नदाता हमारे देश की शक्ति का प्रतीक है। परिवार में बुजुर्गों का दायित्व नई पीढी को नैतिक मूल्य प्रदान करना है। महिला शिक्षा को समाज में बढाए जाने की आवश्यकता है। महिलाओं के बुद्धि कौशल से दुनिया अचंभित है। इसी के साथ उन्होंने अपने परिवार, कुटुंब, वातावरण का ख्याल रखने और अपने कर्तव्यों का पालन करने पर भी जोर दिया। कार्यक्रम को केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने भी सम्बोधित किया।

मार्केटर बनने की जरूरत

उन्होंने किसानों से कृषि उत्पादों के विपणन और व्यापार में भी अपनी साझेदारी बढाने की बात कही। उन्होंने कहा कि किसानों को अपने उत्पाद की मार्केटिंग और वेल्यू एडिट उत्पाद तैयार करने की आवश्यकता है। किसान अपने कृषि उत्पादों को तुरंत बेचने के स्थान पर बाजार की मांग और आपूर्ति को ध्यान में रखते हुए बिक्री करें।

सरसों फसल सरसों अनुसंधान निदेशालय ने किसानों को जारी की सलाह

सिंचाई से बचे, सरसों के लिए आफत बनी ज्यादा नमी

जयपुर। कहावत है कदे घी घणा तो कदे मुट्ठी चणा। सरसों फसल की मौजूदा परस्थितियों पर यह कहावत सटीक साबित हो रही है। इस साल ज्यादा बारिश ने सरसो की फसल को डुबोने का काम किया है। शायद यही कारण है कि इस साल सरसों की बुवाई लक्ष्य से पिछड़ गई। अब फसल को पहला पानी देने की भेड़ चाल मुट्ठी चणा की स्थिति पैदा कर रही है। क्योंकि, ज्यादा नमी के चलते सरसों के पौधों की कमर टूटने लगी है। वहीं, जड़तंस से सडांध उठने लगी है। लेकिन, इस स्थिति से किसान अनजान है। वह फसल में पहला पानी लगा रहे है। इससे फसल में बैक्टीरियल रॉट बीमारी का प्रकोप सिर उठाने लगा है। फसल में पहली सिंचाई कर चुके किसानों से पौधों के स्वास्थ्य को लेकर लगातार मिल रही शिकायतों के बाद सरसों अनुसंधसान निदेशालय, भरतपुर के कृषि वैज्ञानिकों से किसानों को सलाह जारी की है। जिसमें जमीन की नमी के आधार पर ही फसल में पहली सिंचाई करने की बात कही गई है। गौरतलब है कि इस साल प्रदेश के अधिकांश जिलों में औसत से ज्यादा बारिश दर्ज हुई है। इस कारण पहले तो किसानों को बुवाई के लिए खेत तैयार होने का इंतजार करना पड़ा। जैसे की बारिश का दौर रूका तो ज्यादा तापमान ने किसानों के हाथ बाधने का काम किया। इस कारण सरसों की बुवाई इस साल निर्धारित लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाई है। वहीं, अब जमीनी नमी पौधों को रोगी बनाने का काम कर रही है।

अलग-अलग बैक्टीरिया जिम्मेदार

सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने बताया कि सरसों की फसल को ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती है। लेकिन, किसानों में यह धारणा है कि बुवाई का एक महीना होते ही फसल का पहला पानी लगा दो। लेकिन, इस साल पहला पानी फसल का नष्ट होने के कगार पर पहुंचा रहा है। दिन में तेज धूप और जमीनी नमी पौधों को बीमार कर रही है। उन्होंने बताया कि इसके लिए अलग-अलग बैक्टीरिया जिम्मेदार है। ऐसे में किसानों को सलाह है कि जमीन में 4-5 अंगुल तक गीला होने की स्थिति में पहली सिंचाई नहीं देवे। अन्यथा, फसल में अलग-अलग रोग का प्रकोप देखने को मिल सकता है।

बैक्टीरियल रॉट की ज्यादा शिकायतें

उन्होंने बताया कि फसल को पहली सिंचाई दें चुके किसानों से पौधें मुरझाने की लगातार शिकायते मिल रही है। इसका कारण ज्यादा नमी और तेज धूप में पैदा होने वाली बैक्टीरिया रॉट बीमारी है। उन्होंने बताया कि सरसों की फसल को ज्यादा पानी की जरूरत नहीं होती है। ज्यादा नमी और तेज धूप की स्थिति में पौधें मुरझाना शुरू हो जाते है। वहीं, पौधें की जड़ों में सड़ान शुरू हो जाती है। इससे पौधों की ग्रोथ रूक जाती है और धीरे-धीरे पौधा नष्ट हो जाता है।

इन बातों का रखें ध्यान

- निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा ने किसानों को सलाह देते हुए बताया कि भूमि की नमी को 4-5 सेंटीमीटर गहराई पर जांचने के बाद ही सिंचाई करें।
- अत्यधिक सिंचाई से बचें। क्योंकि, इससे फसल में कालर रॉट बीमारी की संभावना बढ़ जाती है।
- जिन किसानों ने पहले ही अपनी सरसों की फसल में सिंचाई कर ली है और उनकी फसल में झुलसने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं, वह शीघ्र ही स्ट्रेप्टोमाइसिन 200 पीपीएम (200 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी) का और कार्बेन्डाजिम का 2 प्रतिशत घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव करें। ध्यान रखें कि छिड़काव संक्रमित भाग पर अवश्य पहुँचे।

बाजरा उत्पादकों को एक बोरी पर 200 का फटका

जयपुर। बाजरे की सरकारी खरीद नहीं होने से प्रदेश के किसान परेशान हैं। उनको मजबूरी में कम दाम पर खुले बाजार में बाजरा बेचना पड़ रहा है। ऐसे में हर बोरी पर लगभग दौ सौ रुपए से ज्यादा का नुकसान हो रहा है। बाजरे का समर्थन मूल्य 2625 रुपए है। जबकि, बाजार में बाजरा 2300 से 2475 के लगभग बिक रहा है। पहले तो कई किसान 2200 रुपए प्रति क्विंटल की दर से भी बेच चुके। इस बार बरसात अच्छी हुई थी। इस कारण बाजरे का बेहत्तर उत्पादन किसानों को इस साल मिला है। लेकिन, अब मूंग उत्पादक किसानों के जैसे ही बाजरा उत्पादकों को भी बाजार के साथ-साथ सरकार की नीतियों का शिकार होना पड़ रहा है।

क्या कहती है रिपोर्ट

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार 17 सितंबर 2024 तक देशभर में 69.88 लाख हैक्टयर क्षेत्र में बाजरा की खेती की गई। जबकि, बीते साल समान अवधि तक 70.89 लाख हैक्टयर क्षेत्र में बाजरा की बुवाई की गई थी। इस हिसाब से इस बार किसानों ने करीब एक लाख हैक्टयर क्षेत्र में बाजरा की कम बुवाई की है।

दाम बढ़ाए, फायदा नहीं

बाजरा श्री अन्न में शामिल है। पिछले वर्ष इसका समर्थन मूल्य 2500 रुपए प्रति क्विंटल था, इस बार प्रति क्विंटल पर 125 रुपए केन्द्र सरकार ने बढ़ाकर इसका समर्थन मूल्य 2625 रुपए कर दिया है। लेकिन, इस मूल्य का फायदा किसानों का नहीं मिल रहा। क्योंकि ,सरकार खरीद ही नहीं कर रही। पूरे देश में बाजरे का सबसे ज्यादा उत्पादन राजस्थान में होता है। देश के कुल उत्पादन का लगभग 42% बाजरा अकेले राजस्थान में होता है। सबसे ज्यादा बाजरा बाडमेर, जैसलमेर, सीकर, चूरू, झुंझुनूं, जोधपुर, नागौर, जयपुर सहित अनेक जिलों में होता है। गौरतलब है कि नई फसल आने से पूर्व बाजरे के बाजार भाव 2100-2200 रूपए प्रति क्विंटल बोले जा रहे थे।

CMYK

बिगड़ती हवा का ठीकरा किसानों पर ही क्यों ?

अपनी बात

हर बार की तरह वायु प्रदूषण का ठीकरा किसान और पराली पर फोड़ा जाने लगा है। लेकिन, क्या वाकई ऐसा है? सोचनीय और चिंतनीय है। वायु प्रदूषण के लिए सबसे पराली से ज्यादा जिम्मेदार तो फर्राटे भरते वाहन, सालभर फैक्ट्रीयों की चिमनियों से निकलने वाला जहरीला धुंआ, धूल कण इत्यादि है। लेकिन, विडम्बना यह है कि खेतों में लगी आग सैटेलाइट पर कैद हो जाती है और वायु प्रदूषण के असल जिम्मेदार कारक आंखो से ओझल ही रहते है। यह बात सही है कि पराली अथवा अवशेष जलाने से मृदा की उर्वरा शक्ति नष्ट होती है। पराली का सलीके से निपटान करके किसान अपने खेतों की उर्वरता बढा सकते हैं और अपनी तकदीर बदल सकते हैं। देश में हर साल करीब 31 करोड टन फसल अवशेष जलाए जाते हैं। लेकिन, वायु प्रदूषण की समस्या के निदान के लिए खेत, किसान और पराली से आगे सोचने की जरूरत सरकार को है। वैज्ञानिक तथ्य है कि एक टन पराली जलाने पर दो किलो सल्फर डाईआक्साइड, तीन किलो ठोस कण, 60 किलो कार्बन मोनोआक्साइड, 1,460 किलो कार्बन डाईआक्साइड और 199 किलो राख निकलती हैं। ऐसे में जब करोडों टन अवशेष जलते हैं तो वायुमंडल की कितनी दुर्गति होती होगी। इन दिनों सीमांत और बडे किसान खरीफ फसलों खासतौर पर धान काटने के लिए हार्वेस्टर जैसी मशीनों का सहारा ले रहे हैं। इससे कटाई से फसल के तने का अधिकांश हिस्सा खेतों में ही रह जाता है। जहां गेहूं, गन्ने की हरी पत्तियां, आल, मूली की पत्तियां पशुओं के चारे के रूप में उपयोग की जाती हैं तो कपास, सनई और अरहर आदि के तनेए गन्ने की सूखी पत्तियां, धान की पुआल आदि को जला दिया जाता है। फसलों के बचे अंश का इस्तेमाल मिट्टी जीवांश पदार्थ की मात्रा बढाने के लिए नहीं किया जाना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। आज पूरी खेती ऐसे रसायनों द्वारा हो रही है, जो कृषि. मित्र सूक्ष्म जीवाणुओं को ही चट कर जाते हैं। ऐसे में खेत की जैवविविधता का संरक्षण बेहद जरूरी है। फसलों के अवशेष इसमें किसानों की मदद कर सकते हैं। किसान चाहें तो फसलों के अवशेषों से कंपोस्ट अथवा जैविक खाद तैयार कर अपने रासायनिक खाद के खर्चे से बच सकते हैं। पुआल को खेत में ढेर बनाकर खुला छोड़ने के बजाय गड्ढों में कंपोस्ट खाद बनाकर उपयोग कर सकते हैं। आलू और मूंगफली जैसी फसलों को खोदाई कर बचे अवशेषों को भूमि में जोत कर मिला सकते हैं। मूंग और उडद की फसल में फलियां तोडकर खेत में मिला सकते हैं। केले की फसल के बचे अवशेषों से तैयार कंपोस्ट खाद में 1.87 प्रतिशत नाइट्रोजन, 3.43 प्रतिशत फास्फोरस और 0.45 प्रतिशत पोटाश होता है। वैसे आधुनिक मशीन रोटावेटर भी फसल अवशेषों को उपयोगी बनाने में बेहद कारगर है। इस मशीन से जुताई करने पर फसल अवशेष मशीन से बारीक होकर मिट्टी में ही मिल जाते हैं। जिन इलाकों में जमीन की नमी कम हो रही है और भूजल और गहराई में जा रहा ह, वहां रासायनिक खाद के बजाय कंपोस्ट ज्यादा कारगर है और पराली जैसे अवशेष बगैर किसी व्यय के आसानी से कंपोस्ट खाद में बदले जा सकते हैं। यदि मिट्टी में नमी कम हो जाए तो जमीन के बंजर होने का खतरा बढ जाता है। फसल अवशेष को जलाने से खेत की छह इंच परत आग में भस्म हो जाती है। जिसमें विभिन्न प्रकार के लाभदायक सूक्ष्मजीव जैसे राइजोबियम, एजेक्टोबैक्टर, नील हरित काई, मित्र कीट के अंडे आदि होते हैं। इससे भूमि की उर्वरा शक्ति भी जर्जर हो जाती है। किसानों का कहना है कि पराली को मशीन से निपटाने पर प्रति एकड कम से कम पांच हजार रुपये का खर्च आता है। फिर अगली फसल के लिए इतना समय होता नहीं कि गीली पराली को खेत में पडे रहने दें। पंजाब में किसानों का एक बडा वर्ग सरकार की सब्सिडी योजना से भी नाखुश है। उसका कहना है कि पराली को नष्ट करने की मशीन बाजार में 75 हजार से एक लाख रुपये में उपलब्ध है। यदि सरकार से सब्सिडी लो तो वह मशीन डेढ़ से दो लाख रुपये की पड़ती है। जाहिर है सब्सिडी उनके लिए बेमानी है। उसके बाद भी मजदूरों की जरूरत होती ही है। किसानों को पराली के हर पक्ष को समझाने के अलावा सामुदायिक स्तर पर मजदूरों की मदद से सरकार खुद इस काम को कुछ साल करे तो शायद उनके मन में व्याप्त शंका का निवारण हो जाए और वे आगे से खुद पराली नहीं जलाएं।

पशुपालन से समृद्ध होता पशुपालक

सप्ताह का साक्षात्कार

पशुपालन कृषि विज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत पालतू पशुओं के विभिन्न पक्ष जैसे भोजन, आश्रय, स्वास्थ्य, प्रजनन आदि का अध्ययन किया जाता है। सकल घरेलू कृषि उत्पाद में पशुपालन का 28-30 प्रतिशत का सराहनीय योगदान है । जिसमें दुग्ध एक ऐसा उत्पाद है । जिसका योगदान सर्वाधिक है। सरकार के सार्थक प्रयासों की बदौलत देश के दुग्ध उत्पादन में राजस्थान प्रथम है। लेकिन, दुग्ध की बढ़ती आवश्यकता को देखते हुए अभी इस क्षेत्र में काफी कुछ किया जा सकता है। पशुपालन से जुड़े विभिन्न पहलुओं जैसे मवेशियों की नस्ल, पालन-पोषण, स्वास्थ्य और आवास प्रबंधन पर पशुपालन विशेषज्ञ डॉ. राजेन्द्र कुमार मीणा से हलधर टाइम्स की हुई वार्ता के मुख्याशं..

जीवन परिचय

डॉ. राजेन्द्र कुमार मीणा मूलतः टोंक जिले के राहोली गांव से ताल्लुक रखते है। वर्तमान में सवाईमाधोपुर जिले के बहराउण्ड़ा कला प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय में वरिष्ठ पशु चिकित्सक के पद पर कार्यरत है। राजस्थान पशु चिकित्सा महाविद्यालय, बीकानेर से बीवीएमएस एंड एच की उपाधि लेने के बाद वर्ष 2008 में पशु चिकित्सक के रूप में अपने कॅरियर की शुरूआत की। मीणा के 2 लघु शोध पत्र, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में एक दर्जन आलेख प्रकाशित हो चुके है। मादा पशु प्रसूति रोग में डॉ. मीणा विशेषज्ञता रखते है।

» गाय और भैंसों की गर्भावस्था में देखभाल कैसे करें?

गाय, भैंस के ग्याभिन होने के बाद उसे दूसरे जानवरों से अलग रखकर चारे-पानी की व्यवस्था अलग करें। प्यार से थपथपाये और आराम से रखें। अगर पशु को कब्ज की शिकायत है तो उसे 600 मिली, अलसी का तेल पिलाये। गायों और पहली बार ब्याने वाली मादाओं को ब्याने से दो माह पहले 1400 ग्राम खुराक रोज खिलाये। धीरे-धीरे यह मात्रा बढ़ाकर ब्याने से 2-3 दिन पहले तक 4-5 किलो तक बढ़ाये। ऐसे आहार से गर्भाशय में पलने वाले गर्भ का विकास होता है और आगामी दुग्धकाल में दुग्ध उत्पादन में भारी बढ़ोतरी होती है। ब्याने से एक दिन पहले गाय को 450 ग्राम इप्सम नामक और एक चम्मच पिसी हुई अदरक करीब 1.5 लीटर पानी में मिलाके पिलावे।

» गाय-भैंस में प्रसव के बाद कौनसी सावधानियां बरतनी चाहिए?

किसी भी हालत में पशु जेर नहीं खाना चाहिये। पशु के पिछले भाग को डिटॉल के पानी से साफ करें। बच्चे की नाल को नये ब्लेड द्वारा नाभि से 6-8 सेमी. की दूरी से काटकर टिंचर आयोडिन का प्रयोग करना चाहिये। गाय को ब्याने के कुछ समय बाद दुहे और उस समय उसे चोकर, गुड़, मेथी और जौ की अच्छी खुराक दें। ब्याने के बाद पहला दूध बहुत ध्यान से निकालना चाहिये । ताकि, बंद थनों को खोला जा सके। एक समय में सारा कीला (खीस) न निकाले । क्योंकि , इससे पशु को दुग्ध बुखार (मिल्क फीवर) हो जाता है, जिससे पशु का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है । पशु को बहुत ज्यादा गर्मी-सर्दी से बचाये और 3-4 दिन तक बच्चे के वजन का दसवां भाग खीस पिलायें।

» जन्म से 3 माह की आयु तक, गाय-भैंस के बच्चों को क्या, कितना और कैसे खिलाए?

गाय-भैंस के बच्चों को प्रारम्भिक जीवन में (जन्म से 3 माह की आयु तक) कुपोषण का प्रभाव उनके जीवन काल की सम्पूर्ण उत्पादन क्षमता पर पड़ता है, शायद अधिकांश पशुपालक इस तथ्य को नहीं जानते हैं। इसलिए पशुपालकों को 3 माह के बच्चे को आहार में 40 प्रतिशत मक्के का दलिया, 40 प्रतिशत अलसी की खली, 8 प्रतिशत चोकर, 10 प्रतिशत मछली का चूरा, 1-5 प्रतिशत खनिज मिश्रण, 0.5 प्रतिशत नमक और 0.5 प्रतिशत एन्टीबायोटिक शामिल करना चाहिए, यह एक संतुलित आहार है।

» संक्रामक रोग प्रकोप होने पर कौन से उपाय करें?

संक्रामक रोग के प्रारम्भिक लक्षण देखते ही रोगी पशु को स्वस्थ पशुओं से अलग स्थान पर रखें, रोगी पशु की चारा-दाना-पानी की व्यवस्था अलग बर्तनों में करें। चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क कर आसपास के स्वस्थ पशुओं में टीकाकरण करवायें। रोगग्रस्त क्षेत्रों में पशुओं का आवागमन। परिवहन नहीं करें, पहले आप स्वस्थ पशु का दुग्ध निकालें। तत्पश्चात रोगी पशु का दुग्ध निकालें और हाथ, बर्तन आदि को एन्टीसेप्टीक घोल जैसे लाल दवा, डिटॉल आदि से साफ करें। संक्रामक रोग से मृत पशु के शव को गांव से बाहर गड्ढा खोदकर (1.5 मीटर गहरा) चूने अथवा नमक के साथ दबा देना चाहिये। साथ ही, नियमित रूप से बाह्य और अन्त परजीवी नाशक औषधी का प्रयोग पशु चिकित्सक की सलाह करना चाहिए।

» पशु आहार में खनिज मिश्रण क्यों आवश्यक है?

पशु शरीर के कंकाल (हड्डियों) एवं दांतों की संरचना और मजबूती इन्हीं तत्वों पर निर्भर है। शरीर की विभिन्न शारीरिक क्रियाओं जैसे पाचन, रक्त बनना और संचार, मानसिक नाड़ी तंत्र और कार्यों का संतुलन मदकाल, गर्भाधान, प्रजनन शक्ति, दुग्ध उत्पादन आदि के संचालन में खनिज तत्वों की अहम भूमिका है। न्यूक्लियो प्रोटीन जिसके द्वारा पैतृक गुण एक पीढी से दूसरी पीढी में जाते हैं कि संरचना का आधार फॉस्फोरस है। पशु शरीर में बीमारियों से बचाव करने की शक्ति में विकास होता है।

अध्यात्म

मुश्किलें नहीं, बल्कि उनके प्रति रवैया हमें सफल अथवा असफल बनाता है

चलते रहने की जिद हमें किसी भी मंजिल तक पहुंचा सकती है। मुश्किलों के आने पर हार मत मानिए। जिद्दी लोगों को अक्सर लोग कम पसंद करते हैं, मगर यह भी गलत नहीं है कि ऐसे ही लोगों में दुनिया को बदलने का साहस होता है। इस दुनिया में कुछ भी पाना है तो आपको थोड़ा तो जिद्दी बनना पड़ेगा।

अपने आसपास कुछ लोगों को आप जुझारु, सनकी या जिद्दी कहते हैं। इसकी वजह होता है उनका एक खास गुण कि उन्हें जो चाहिए, उसे वह हासिल करके ही दम लेते हैं। जिद्दी लोगों को अक्सर लोग कम पसंद करते हैं, मगर यह भी गलत नहीं है कि ऐसे ही लोगों में दुनिया को बदलने का साहस होता है। इस दुनिया में कुछ भी पाना है तो आपको थोड़ा तो जिद्दी बनना पड़ेगा। यह कहानी भी ऐसे ही एक जिद्दी लड़के की है, जिसका नाम था विराट। विराट पिछले कई साल से अपने शहर में होने वाली मैराथन में हिस्सा लेता था, लेकिन कभी रेस पूरी नहीं कर पाता था। इस बार वह बहुत उत्साहित था, क्योंकि वह पिछले कई महीनों से रोज इस रेस की तैयारी कर रहा था। उसे अपने आप पूरा पर भरोसा था कि वह इस साल की मैराथन रेस जरूर पूरी कर लेगा। देखते ही देखते मैराथन का वो दिन भी आ गया और सभी लोग एक जगह एकत्रित हुए और जैसे ही रेस शुरू हुई बाकी लड़को की तरह विराट ने भी दौड़ना शुरू किया। वह जोश और हिम्मत से भरा हुआ था, और बड़े अच्छे ढंग से दौड़ रहा था। लेकिन आधी रेस पूरी करने के बाद विराट बिलकुल थक गया और उसके मन में आया कि बस अब वहीं बैठ जाए। वह ऐसा सोच ही रहा था कि तभी उसने खुद को कहा। रुको मत विराट! आगे बढ़ते रहो, अगर तुम दौड़ नहीं सकते तो कम से कम जॉगिंग करते हुए तो आगे बढ़ सकते हो। तो बस आगे बढ़ो। और विराट अब पहले की अपेक्षा धीमी गति से आगे बढ़ने लगा। कुछ किलोमीटर इसी तरह दौड़ने के बाद विराट को लगा कि उसके पैर अब और आगे नहीं बढ़ सकते, वह लड़खड़ाने लगा, विराट के अन्दर विचार आया, अब बस और नहीं बढ़ सकता! लेकिन एक बार फिर विराट ने खुद को समझाया!! रुको मत विराट। अगर तुम जॉगिंग नहीं कर सकते तो क्या, कम से कम चल तो सकते हो तो बस चलते रहो। विराट अब जॉगिंग करने की बजाय धीरे-धीरे लक्ष्य की ओर बढ़ने लगा। कई सारे लड़के विराट से आगे निकल चुके थे। चलते-चलते विराट को फिनिशिंग पॉइंट दिखने लगा, लेकिन तभी वह अचानक से लड़खड़ा कर गिर पड़ा। उसके दायें पैर की नसें खिंच गई थीं। जमीन पर पड़े-पड़े विराट के मन में खयाल आया, की अब मैं आगे नहीं बढ़ सकता, लेकिन अगले पल ही वो जोर से चिल्लाया। आज चाहे कुछ भी हो जाए, मैं ये रेस पूरी करके रहूँगा। ये मेरी जिद है माना मैं चल नहीं सकता लेकिन लड़खड़ाते ही सही लेकिन इस रेस को पूरी जरूर करूंगा। विराट ने साहस दिखाया और एक बार फिर दर्द सहते हुए आगे बढ़ने लगा, और इस बार वह तब तक बढ़ता रहा जब तक उसने फिनिशिंग लाइन पार नहीं कर ली। और फिनिशिंग लाइन पार करते ही वह जमीन पर लेट गया उसके आंखों से आंसू निकलने लगे। विराट ने रेस पूरी कर ली थी, उसके चेहरे पर इतनी खुशी और मन में इतनी संतुष्टि कभी नहीं आई थी आज विराट ने अपनी जिद के कारण न सिर्फ एक रेस पूरी की थी बल्कि जिंदगी की बाकी रेसों के लिए भी खुद को तैयार कर लिया था।

प्रदेश में किसान कानून

राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955

किसानों के लिए प्रदेश में पालित काश्तकारी नियम, अधिनियम, धारा, उपधारा, विच्छेद, शब्दावली परिभाषा, न्यायिक अपीलीय अधिकार से जुड़ी जानकारी दी जा रही है। कॉलम में राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा-उपधारा से जुड़ी जानकारी इस प्रकार है।

धारा 244. अपील में यह अभिवचन कि वाद गलत न्यायालय में संस्थित किया गया था.- (1) जब सिविल अथवा राजस्व न्यायालय से संस्थित किसी वाद की अपील किसी सिविल न्यायालय में होती हो तो यह आक्षेप कि वाद गलत न्यायालय में संस्थित किया गया था, यदि उसे प्रारम्भिक न्यायालय में नहीं उठाया गया था, अपील न्यायालय द्वारा ग्रहण नहीं किया जायेगा और अपील न्यायालय अपील का निपटारा इस प्रकार करेगा मानो वाद सही न्यायालय में संस्थित किया गया था।

धारा 245. प्रारम्भिक न्यायालय में आक्षेप कर लिए जाने की दशा में प्रक्रिया.- (1) यदि ऐसे किसी वाद में, प्रारम्भिक न्यायालय में आक्षेप कर लिया गया हो और अपील न्यायालय के समक्ष वाद के अवधारण के लिए आवश्यक सभी सामग्री मौजूद हो तो वह अपील को उसी प्रकार निपटायेगा मानो वाद सही न्यायालय में संस्थित किया गया था। यह और कि अपने पर लागू अधिकतम क्षेत्रफल के बराबर क्षेत्रफल की भूमि अपनी निजी खेती के अधीन धारण करने वाला भू-धारक भी खण्ड (घ) के अधीन अभिधारी की बेदखली के लिए आदेश प्राप्त करने का हकदार नहीं होगा और कम क्षेत्रफल धारण करने वाला भू-धारक ऐसे किसी आदेश का हकदार केवल इतने क्षेत्र के लिए होगा जो उसके अपने द्वारा पहले से ही धारित क्षेत्र को मिलाकर उस पर लागू अधिकतम-सीमा क्षेत्र से अधिक नहीं हो।

(1-क) राजस्थान राजस्व विधियाँ (प्रसार) अधिनियम, 1957 के प्रारम्भ के पूर्व से आबू क्षेत्र में भूमि धारण करने वाला कोई भी अभिधारी इस कारण से कि समय अधिक व्यतीत हो गया है

अथवा कि ऐसे प्रारम्भ से पूर्व उसे बाम्बे टेनेन्सी एण्ड एग्रीकल्चर लेण्ड्स एक्ट, 1948 की धारा 32 के अर्थान्तर्गत उसकी जोत का क्रेता समझ लिया गया है। उपधारा (1) में वर्णित आधारों में से किसी भी आधार पर बेदखली का दायी नहीं होगा।

(2) जहां से एक से अधिक अभिधारी अथवा उप-अभिधारी हो अथवा जब अभिधारी अथवा उप-अभिधारी द्वारा धारित भूमि का क्षेत्रफल उससे अधिक है, जिससे कि उपधारा (1) के खण्ड (घ) के अधीन बेदखली चाही जा सके, वहां ऐसे मामलों में अपनाई जाने योग्य प्रक्रिया राज्य सरकार विहित करेगी।

टिप्पणी

भूमि काश्त करने के आधार पर खातेदारी अधिकार-भूमि मंदिर मथुरेशजी के नाम दर्ज है तथा अपीलान्ट को संवत् 2032-2035 की जमाबन्दी में पुजारी होना दर्शाया-

धारा 46 (1)(ए) अधिनियम के अनुसार मंदिर मूर्ति शाश्वत नाबालिग होती है और इसके नाम पर दर्ज भूमि पर किसी अन्य को खातेदारी अधिकार प्रोद्यभूत नहीं होते है। विद्यमान रिकॉर्ड के अनुसार यह भूमि मंदिर मूर्ति के नाम पर दर्ज है, इसी कारण सहायक कलेक्टर ने भी धारा 88 अधिनियम के तहत कोई आदेश पारित नहीं करके प्रतिवादीगण को बेदखल करके कजा वादी को दिलाने का ही आदेश दिया है।

क्रमशः

ब्लॉकचेन तकनीक की कृषि में भूमिका

नजरिया :-

कृषि ही किसानों की आय का मुख्य साधन है जिसमें अधिकतर किसानों के पास सीमित भूमि है। उल्लेखनीय है कि भारत के 85 प्रतिशत किसान पांच एकड़ से कम अथवा केवल पांच एकड़ भूमि पर खेती करते हैं। जिनमें से आधे भारत के कई हिस्सों में शुष्क, वर्षा आधारित हो सकते हैं। परन्तु इसके बाद भी, अब भारत दुनिया का सबसे बड़ा दाल, जूट और दूध का उत्पादक है और गन्ना, मूँगफली, सब्जियां, फल, चावल, गेहूं और कपास के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक के रूप में उभरा है। इसके अतिरिक्त मसालों, मत्स्य, पशुधन और बागवानी फसलों के प्रमुख उत्पादकों में भी प्रमुख है। परन्तु दुर्भाग्य से जो अर्थव्यवस्था के कुल सकल मूल्य वर्धित (जीवीए) में कृषि की हिस्सेदारी 2022ए23 में घटकर 18.3प्रतिशत हो गई है और यह गिरावट कृषि जीवीए में गिरावट से नहीं। बल्कि, औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में तेजी से विस्तार के कारण आई है।

यदि भविष्य में भारत को वार्षिक विकास दर को 8-10 प्रतिशत हासिल करना है तो कृषि क्षेत्र को निरंतर चार प्रतिशत अथवा उससे अधिक दर से बढ़ना होगा। परन्तु कृषि में चार प्रतिशत विकास दर को प्राप्त करने में बहुत सी चुनौतियां हैं जिनमें कम भूमि धारकए पुरानी कृषि पद्धतियां, पानी की कमी, बाजार में अस्थिरता और कीमतों में उतार-चढ़ाव और सबसे महत्वपूर्ण रूप से खराब आपूर्ति श्रृंखला। जब तक हम इन चुनौतियां को हल नहीं करेंगे, तब तक कृषि में उज्वल भविष्य की कल्पना करना संभव नहीं। हालांकि, केंद्र और राज्य सरकारें किसानों की आय और खेती की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए टिकाऊ कृषि सुधारों पर काम कर रही हैं। जिसमें किसानों की आय दोगुनी करना, कृषि में ड्रोन, आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस और ब्लॉकचैन तकनीक का उपयोग प्रमुख है। बात करें ब्लॉकचेन तकनीक की तो यह एक उपनिवेशीय डिजिटल लेजर प्रणाली है जो कई सिस्टमों के बीच लेन-देन को सुरक्षित और अपरिवर्तनीय रूप से लागू करती है। यह एक ऐसी संरचना है जो पीयर-टू-पीयर नोड्स के माध्यम से जुड़े नेटवर्क में कई डेटाबेस में जनता के लेन-देन संबंधी रिकॉर्ड संग्रहित होता है। प्रत्येक ब्लॉक में आम तौर पर पिछले ब्लॉक का विवरण भी शामिल होता है, जिससे एक श्रृंखला जैसी संरचना बनती है। ब्लॉकचेन में चेन का तात्पर्य, क्रमिक क्रम में ब्लॉकों को जोड़ने से है। प्रत्येक ब्लॉक में पिछले ब्लॉक के डेटा का एक विवरण होता है, जो प्रभावी रूप से ब्लॉक की एक श्रृंखला बनाता है। यह जोड़ने वाला तंत्र, ब्लॉकचेन में संग्रहित डेटा की अखंडता और अपरिवर्तनीयता सुनिश्चित करता है। ब्लॉकचेन, किसानों को खेत से उपभोक्ता तक माल की आवाजाही को ट्रैक करने में सक्षम बनाता है। कृषि व्यवसाय के भीतर यातायात और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन को अनुकूलित करन, कृषि उत्पादों के परिवहन, भंडारण और वितरण के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अतिरिक्त, ब्लॉकचेन मांग को पूरा करने, ओवरस्टॉकिंग को रोकने और अनावश्यक भंडारण लागत को कम करने के लिए इन्वेंट्री स्तर को अनुकूलित कर सकता है। ब्लॉकचेन तकनीक, आपूर्ति श्रृंखला में संभावित व्यवधानों का अनुमान लगा सकता है, जैसे कि मौसम से संबंधित देरी अथवा लॉजिस्टिक चुनौतियां, जिससे कि किसानों और वितरकों को इन मुद्दों को सक्रिय रूप से संबोधित करने और संचालन में निरंतरता बनाए रखने में सक्षम बनाती हैं। ब्लॉकचेन तकनीक उत्पादक से लेकर अंतिम उपभोक्ता तक उत्पाद आपूर्ति श्रृंखला को पारदर्शिता निष्पादित करती है और दक्षता को बढ़ाकर कृषि आपूर्ति श्रृंखला में क्रांतिकारी बदलाव लाने की अपार संभावनाएं प्रदान करती है। यह किसान से शुरू होकर, परिवहन, भंडारण, शिपिंग, थोक बाजारए खुदरा दुकानों और अंतिम उपभोक्ता सहित आपूर्ति श्रृंखला के प्रत्येक चरण को ब्लॉकचेन पर दर्ज किया जा सकता है। जो कृषि उत्पादों की यात्रा को ट्रैक करने, उनकी प्रामाणिकता को सत्यापित करने और गुणवत्ता मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने में सक्षम बनाता है। लेन-देन का एक सुरक्षित और अपरिवर्तनीय रिकॉर्ड प्रदान करके, ब्लॉकचेन तकनीक प्रतिभागियों के बीच विश्वास को बढ़ावा देती है, धोखाधड़ी के जोखिम को कम करती है। ब्लॉकचेन तकनीक का कृषि में उपयोग कई तरह से किया जा सकता है। इस तकनीक में पारदर्शिता का पता लगाने की क्षमता और दक्षता को बढ़ाकर कृषि आपूर्ति श्रृंखला को अनुकूलित करने में महत्वपूर्ण क्षमता है। ब्लॉकचेन तकनीक आपूर्ति श्रृंखला संचालन को अनुकूलित कर सकती है, अक्षमताओं को कम कर सकती है। ब्लॉकचेन तकनीक द्वारा अनुकूलित आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के माध्यम स, कृषि हितधारक संसाधन आवंटन में सुधार कर सकते हैं, भोजन की बर्बादी को कम कर सकते हैं। ब्लॉकचेन संपूर्ण कृषि आपूर्ति श्रृंखला में पारदर्शिता और ट्रैसेबिलिटी बढाती है। उत्पादन से वितरण तक प्रत्येक चरण को ब्लॉकचेन पर रिकॉर्ड किया जा सकता है, जिससे हितधारकों को कृषि उत्पादों की यात्रा को ट्रैक करने की अनुमति मिलती है। इससे उत्पादों की उत्पत्ति की पहचान करने, गुणवत्ता मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने और खाद्य धोखाधड़ी और संदूषण के जोखिम को कम करने में मदद मिलती है। ब्लॉकचेन तकनीक, किसानों और उपभोक्ताओं अथवा खरीदारों के बीच सीधे सहकर्मी से सहकर्मी लेनदेन की सुविधा प्रदान करती है। बिचौलियों को खत्म करके और किसानों को सीधे बाजारों से जोड़कर, किसान संभावित रूप से अपनी उपज के लिए बेहतर कीमतें प्राप्त कर सकते हैं और व्यापक बाजार तक पहुंच प्राप्त कर सकते हैं। इसमें फसल की पैदावार, मिट्टी की स्थिति, मौसम के पैटर्न और उपकरण प्रदर्शन सहित कृषि डेटा को सुरक्षित रूप से प्रबंधित कर सकता है। इंटरनेट ऑफथिंग्स उपकरणों के साथ एकीकरण वास्तविक समय डेटा संग्रह और विश्लेषण की अनुमति देता है, जिससे किसान फसल प्रबंधन, सिंचाई और संसाधन आवंटन के बारे में सूचित निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं।

लक्ष्य से 49 फीसदी हुई रबी फसलों की बुवाई

गुनगुनी सर्दी के साथ बढ़ रही है रबी की बुवाई

जयपुर। हल्की सर्दी चमकने के साथ ही प्रदेश में रबी फसलों की बुवाई भी चमकने लगी है। किसान गेहूँ-जौ और मसाला फसल की बुवाई के कार्य में जुटे हुए है। दीपावली बाद मौसम में आए बदलाव से कोहरे के साथ ही सर्दी ने रंग दिखाना शुरू कर दिया है। इससे गेहूं-जौ फसल के लिए मौसम अनुकूल होने का इंतजार कर रहे किसानों ने पलेवा कर खेतों में बीज बिखेरना शुरू कर दिया है। मौसम के अनुकूल होने की चमक किसानों के चेहरों पर नजर आ रही है। उधर, प्रदेश में रबी फसल की बुवाई निर्धारित एक करोड़ 19 लाख हैक्टयर लक्ष्य के मुकाबले 58. 88 लाख हैक्टयर में हो चुकी है। बुवाई के आंकड़ो को देखते हुए इस वर्ष सरसों और चना बुवाई लक्ष्य से पिछड़ सकती है। क्योंकि, दोनों ही फसलों की बुवाई निर्धारित लक्ष्य से काफी कम देखने को मिल रही है। किसानों से मिली जानकारी के अनुसार मौसम में ठंड़क घुलने से बुवाई के लिए ट्रेक्टर की मांग तेजी से बढ़ी है। कृषि विभाग का मानना है कि ठंड चमकने से गेहूं का जोरदार और समय पर अंकुरण होने के आसार है। वहीं, सरसों और चना की वृद्धि भी अच्छी होगी। गौरतलब है कि सरसों बुवाई का वैज्ञनिक समय समाप्त हो चुका है। वहीं, किसान इस सप्ताह तक ही चना बुवाई का कर सकेंगे। जबकि, गेहूं की बुवाई मध्य दिसम्बर तक की जा सकती है। इस लिहाज से माना जा रहा है कि इस वर्ष प्रदेश में गेहूं के साथ-साथ मसाला फसलों की बुवाई अच्छी होगी।

धनिया से ज्यादा लहसुन

हाड़ौती संभाग में किसान इस वर्ष धनिया से ज्यादा लहसुन की बुवाई पर जोर दे रहे है। किसानों का कहना है कि धनिया फसल में पिछले कुछ वर्षो से नुकसान उठाना पड़ रहा है। जबकि, लहसुन की फसल किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो रही है। इस कारण कोटा, बारां, झालावाड़ और बूंदी जिले में लहसुन का क्षेत्रफल बढ़ने की उम्मीद है। संभाग में इस साल बुवाई का आंकड़ा एक लाख हैक्टयर क्षेत्र से ज्यादा रह सकता है। उधर, मौसम विभाग ने आगामी सप्ताह से सर्दी के जोर पकड़ने की संभावना जताई है।

चने में उखटा

प्रदेश के सवाईमाधोपुर, दौसा, टोंक सहित दूसरे जिलों में चने की फसल में उखटा और जड़गलन रोग का प्रकोप देखने को मिला है। कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि चना फसल को जड़गलन और उखटा रोग से बचाने के लिए किसान 500 ग्राम कार्बेण्डाजिम 50 डब्ल्यूपी को 5-6 किग्रा रेत मिलाकर सिंचाई से पूर्व प्रति बीघा की दर से पौधे के जड़ क्षेत्र में भुरकाव करें।

लक्ष्य से 41 फीसदी दूर चना बुवाई

प्रदेश में इस वर्ष चने की बुवाई शत प्रतिशत से 41 फीसदी पिछड़ी हुई नजर आ रही है। वहीं, सरसों के हालात भी कमोबेश ऐसे ही है। सरसों की बुवाई भी निर्धारित लक्ष्य से 29 फीसदी पिछड़ी हुई है। गत वर्ष समानावधि में 13.20 लाख हैक्टयर में चना फसल की बुवाई किसानों ने की थी। जबकि, इस साल 13.38 लाख हैक्टयर क्षेत्र में फसल की बुवाई हो पाई है। उल्लेखनीय है कि कृषि विभाग ने चना बुवाई के लिए साढे 22 लाख हैक्टयर क्षेत्र में लक्ष्य तय किया है। वहीं, सरसों की बुवाई के लिए साढे 40 लाख हैक्टयर लक्ष्य के मुकाबले 29.01 लाख हैक्टयर क्षेत्र में हुई है। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि सरसों और चने की बुवाई लक्ष्य तक पहुंचने का अनुमान है। चुनाव के चलते फील्ड से बुवाई के आंकडे समय पर नहीं मिल पा रहे है।

जीरा बुवाई ने पकड़ा जोर

पश्चिमी राजस्थान में तापमान अब अनुकूल होने के चलते जीरे की बुवाई ने प्रगति दर्शाई है। कृषि वैज्ञानिक डॉ. तखत सिंह राजपुरोहित का कहना है रबी सीजन की फसलों के लिए दस डिग्री से कम तापमान अनुकूल होता है। वैसे 12 डिग्री तापमान तक भी फसलें ग्रोथ करती हैं। एक अनुमान के अनुसार जीरे की बुवाई दो से ढ़ाई लाख हैक्टयर में हुई हैं। जीरे की सर्वाधिक बुवाई बाड़मेर जिले में हुई है। इसके अलावा नागौर, जैसलमेर, झुंझुनूं, जोधपुर, जिले में बुवाई हुई है। वहीं, ईसबगोल की बुवाई भी समय के साथ बढ़ रही हैं।

संतरे में काली मस्सी

संतरा बगीचों में काली मस्सी कीट का प्रकोप देखने को मिल रहा है। इससे किसान चिंतित है। कृषि विशेषज्ञों ने बताया कि काली मस्सी के नियंत्रण के लिए किसान क्यूनॉलफॉस 1.25 मिली, डाइमिथोएट 2 मिली, ट्राइजोफॉस 2 मिली. अथवा प्रोपेनोफॉस 1.5 मिली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर शक्ति चालित स्प्रेयर से इस प्रकार छिड़काव करें कि घोल पतियों की निचली सतह तक पहुंच जाए।

पशुओं को ऐसे बचाएं सर्दी से

कृषि विज्ञान केन्द्र भीलवाड़ा के प्रभारी डॉ. सीएम यादव ने बताया कि पशुपालकों को पशुओं के लिए अपने घर के आस-पास ओट में एक कच्चा/पक्का पशु आवास बनाना चाहिए। जो कि हवा के रूख के विपरीत हो, आवास को साफ-सुथरा, सूखा रखें। पशुओं को ठण्ड से बचाव के लिए उनके ऊपर बारदाना, बोरी गर्म कम्बल डालकर ओढ़ाकर रखें। ऊंटों - घोड़ों पर झूल डालें, छोटे पालतु बछड़ों को गर्म कपड़े पहना कर ठण्ड से बचाएं। पशुओं को खुले में नहीं छोड़े। पशुओं को संतुलित आहार दिया जाए। जिसमें दाना, गुड़ खल की उचित मात्रा शामिल हो। इन दिनों प्रसव का समय भी होने के कारण ब्याने के बाद पशुओं के बच्चों का विशेष ध्यान रखा जाए। मां बच्चे को उचित आवास/ आहार प्रदान करें। पशु के बीमार होने पर पशु चिकित्सक से इलाज करवाएं।

गेहूं -	7.05	**जौ -**	1.37
चना -	13.38	**सरसों -**	29.01
तारामीरा-	0.65	**अलसी -**	0.8

बुवाई क्षेत्र लाख हैक्टयर में।

नवादि युगधारा प्रणेता समागम कार्यक्रम में बोले सीएम

प्रदेश के 6 हजार से ज्यादा गांवों का होगा विकास

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बांसवाडा के गोविन्द गुरू महाविद्यालय मैदान में आयोजित नवादि युगधारा प्रणेता समागम कार्यक्रम को सम्बोधित किया। इस मौके पर उन्होने कहा कि पीएम मोदी ने ने पीएम-जनजाति आदिवासी न्याय महाअभियान- जनमन की शुरूआत की है। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान से देशभर में 63 हजार आदिवासी गांवों में 5 करोड से अधिक लोगों को लाभान्वित किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत राज्य के 40 जिलों के 208 पंचायत समितियों के 6019 गांवों में सामाजिक, आर्थिक और आधारभूत विकास कार्य करवाकर इन गांवों को विकसित किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल ने आदिवासियों और परम्परागत वन निवासियों के उत्पादन हेतु गोविन्द गुरू जनजातीय क्षेत्रीय विकास योजना शुरू किए जाने की घोषणा भी की। साथ ही, समारोह में दो राजसखियों को 114 करोड रुपये का चैक प्रदान किया।

किसानों को सम्मान

उन्होंने आदिवासी जनजातीय क्षेत्र में उन्नत किसान, महिला उद्यमी, शिक्षा, खेल, कला और संस्कृति के क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करने वाली पांच-पांच प्रतिभाओं सहित नवाचार करने वाले दो व्यक्ति यों को पुरस्कार से सम्मानित किया। उन्होंने मेला मैदान में लगाई स्टॉल्स एवं प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। मुख्यमंत्री को आदिवासी अंचल की पहचान मांडना चित्र और तीर कमान भेंट किया गया। शर्मा ने इस अवसर पर गोविन्द गुरू जनजातीय क्षेत्रीय विकास योजना की पुस्तिका का भी विमोचन किया।

सांस्कृतिक समारोह का समापन

ट्रॉफी पाकर खिले प्रतिभागियों के चेहरे

जोधपुर। कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय अंतर-कक्षा सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का समापन पुरस्कार वितरण के साथ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, अधिष्ठाता और संकाय अध्यक्ष, डॉ. सीताराम कुम्हार और विशिष्ट अतिथि निदेशक, पीएमई डॉ. रामदेव सुतलिया रहे। दो दिवसीय प्रतियोगिताओं में विभिन्न गायन, नृत्य, नाटक, मूकाभिनय सहित साहित्यिक प्रतियोगिताओं में क्विज, वाद विवाद, एक्सटेंपोर एलोक्यूशन शामिल रही। डॉ महेंद्र कुमार के निर्देशन में फाइन आर्ट्स की प्रतियोगिताओं में कोलाज, पोस्टर मेकिंग, क्ले मॉडलिंग, कार्टूनिंग, रंगोली और ऑन द स्पॉट पेंटिंग प्रतियोगिताएं शामिल रही। समापन के दौरान डॉ. सीताराम कुम्हार ने कहा कि सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं हमारे अकादमिक विकास का अहम हिस्सा हैं। इसमें भाग लेना महज मनोरंजन नहीं है। बल्कि, करियर के लिए भी एक नई दिशा है। डॉ रामदेव सुतलिया ने विद्यार्थियों को पूरे जोश और उत्साह के साथ प्रतियोगिताओं का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया।

यह बने विजेता

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रभारी, डॉ कृष्णा सहारण ने बताया कि विभिन्न वर्गों में बीस से अधिक प्रतियोगिताएं रखी गई। वोकल गायन में कविता शर्मा, बीएससी, तृतीय वर्ष, देश भक्ति गायन में बीएससी, तृतीय वर्ष ग्रुप, वही नृत्य प्रतियोगिता में बीएससी द्वितीय वर्ष का ग्रुप विजेता रहा। डिबेट प्रतियोगिता में ख्वाहिश, प्रश्नोत्तरी में शालू चौधरी और महेश कांटवा विजेता रहे। प्रतियोगिताओं में संयुक्त रूप से बीएससी तृतीय वर्ष के छात्रों ने बाजी मारी। मंच संचालन डॉ. कमल सैनी ने किया।

गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना

वर्मी कम्पोस्ट यूनिट पर 10 हजार का अनुदान

जयपुर। रासायनिक खेती से जैविक खेती की ओर से किसानों का रूझान बढ़ाने के उद्देश्य से सरकार की ओर से गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना लागू की गई है। योजना के तहत गौवंशों के गोबर से वर्मी कम्पोस्ट (जैविक खाद) बनाने की यूनिट लगाने पर किसान को अनुदान मिलेगा। प्रत्येक किसान को 10 हजार रुपए अनुदान दिया जाएगा। इस योजना में प्रदेश के 18 हजार से ज्यादा किसानों को लाभान्वित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

किसान होंगे मालामाल

योजना के तहत किसान को अपने खेत में वर्मी कम्पोस्ट यूनिट लगानी होगी। इस योजना से किसानों को रासायनिक खेती से बढ़ रहे दुष्प्रभावों को कम करने में मदद मिलेगी। वहीं, जैविक खाद के उपयोग करने से खेतों की मिट्टी ज्यादा उपजाऊ होने के साथ फसलों के उत्पादन में बढ़ोतरी हो सकेगी। जिससे किसानों के मालामाल होने के आसार बढ़ जाएंगे।

ऐसे करें आवेदन

योजना के तहत राज किसान साथी पोर्टल पर इच्छुक किसान अपना ऑनलाइन आवेदन करना होगा। पात्र किसान ई-मित्र के जरिए आवेदन कर जैविक खाद यूनिट लगाकर प्रोत्साहन राशि प्राप्त कर सकेंगे।

क्या है गोवर्धन जैविक उर्वरक योजना

कृषि आयुक्त लय के संयुक्त निदेशक एटीसी डॉ. अर्जुनलाल ने बताया कि राजस्थान सरकार की गोवर्धन जैविक योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य में जैविक खेती को बढ़ावा देना है। किसानों को गोवंश के गोबर से जैविक खाद (वर्मी कम्पोस्ट) उत्पादन के लिए प्रेरित किया जाएगा। प्रत्येक किसान को अपने खेत में 20 फुट लंबी, तीन फुट चौड़ी व ढाई फीट गहरी यूनिट बनानी होगी। साथ ही, प्रत्येक यूनिट के लिए किसान को 8 से 10 किलो केंचुए अपने स्तर पर खरीदकर यूनिट में छोड़ने होंगे। इसके बाद किसान वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग अपने खेत कर सकेंगे। इसके अलावा किसान वर्मी कम्पोस्ट को बेचकर अपनी आय भी बढ़ा सकेंगे।

देश-विदेश

कृषि सहयोग पर हुई चर्चा

नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया के उच्चायुक्त फिलिप ग्रीन ने कृषि भवन में कृषि सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी से भेंट कर भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच कृषि संबद्ध क्षेत्रों में सहयोग के नए अवसरों को तलाशने पर चर्चा की। बैठक के दौरान, डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि सरकार न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। बल्कि, किसानों की आय बढ़ाने और आबादी के लिए पोषण सुरक्षा में सुधार करने के लिए भी प्रतिबद्ध है। डॉ. चतुर्वेदी ने कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण में सटीक कृषि, डिजिटल कृषि मिशन और छोटे खेतों के मशीनीकरण सहित तकनीकी प्रगति के महत्व पर भी बल दिया।

किसानों को मिलेगी आईडी

लखनऊ। सरकार के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप साही ने किसान क्रेडिट कार्ड, डिजिटल क्रॉप सर्वे और फार्मर रजिस्ट्री जैसे कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए कहा कि सरकार जल्द ही प्रदेश के किसानों को डिजीटल आईडी प्रदान करने जा रही है। किसानों को जल्द ही पहचान पत्र जारी करने के लिए गांव में कैंप भी लगाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि किसान डिजिटल आईडी कार्ड का उद्देश्य किसानों को एक यूनिक पहचान प्रदान करना है, जिससे वे विभिन्न सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों का सीधा लाभ उठा सकें। यह कार्ड किसानों की भूमि, फसल, और आर्थिक स्थिति से संबंधित सभी जानकारी को डिजिटली सुरक्षित रखेगा।

कृषि वैज्ञानिकों ने किया प्रदर्शन

जबलपुर। केन्द्र सरकार ने कृषि वैज्ञानिकों की रिटायरमेंट की उम्र 65 साल से घटाकर 62 साल कर दी है. इसके अलावा कई भत्ते भी खत्म कर दिए हैं। यहां तक दीपावली के समय मिलने वाला बोनस भी नहीं दिया गया। कुछ ऐसे ही 15 सूत्रीय मांगों को लेकर जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय में कृषि विज्ञान केंद्र एम्पलाई वेलफेयर एसोसिएशन ने केंद्र सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। कर्मचारी नेता डॉ. विशाल मेश्राम ने बताया केंद्र सरकार यदि अपने नियमों में परिवर्तन नहीं किया तो जल्द ही आंदोलन शुरू किया जायेगा।

टिकाऊ कृषि पर दिया जोर

लुधियाना। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पीएयू) लुधियाना में जलवायु बदलाव और ऊर्जा सं मण के सामने कृषि खाद्य प्रणालियों को बदलना विषयक चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल ने टिकाऊ कृषि पद्धतियों को आगे बढ़ाने और कृषि खाद्य प्रणालियों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बचाव के लिए जागरूकता बढ़ाने की बात कही। उन्होंने आर्थिक स्थिरता को बनाए रखते हुए पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव कम करने के लिए उद्योगों के लिए सौर ऊर्जा और कचरा प्रबंधन रणीनीति पर फोकस करने की बात कही।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

ज्यादा आमदनी के लिए प्रसंस्करण की ओर बढाएं कदम

राजसमंद। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने कृषि की विभिन्न पद्धतियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ज्यादा आमदनी के लिए किसान समन्वित खेती को अपनाएं। साथ ही, उत्पाद प्रसंस्करण की ओर भी कदम बढाएं। ताकि, प्रदेश में उत्पादित फसलों को निर्यात करके विदेशी मुद्रा भंड़ार को बढ़ाया जा सके। डॉ. कर्नाटक कृषि विज्ञान केन्द्र, राजसमंद में आयोजित 31वीं, वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। इस बैठक को विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक डा. आरएल सोनी ने भी सम्बोधित किया। उन्होने कहा कि तकनीक आधारित कृषि को अपनाकर किसान अपनी आय के साथ-साथ फल-सब्जी और अनाज का उत्पादन बढ़ा सक ते है। अटारी जोधपुर के निदेशक डॉ. जेपी मिश्रा ने आधुनिक कृषि तकनीक का लाभ किसानों तक पहुंचाने के लिए ठोस कार्ययोजना तैयार करने की आवश्यकता जताई। साथ ही, केन्द्र पर क्रॉप केफिटएरिया स्थापित करनें और नवीन संचार साधनों का उपयोग करने के निर्देश दिए। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. पीसी रेगर ने बैठक में वर्ष 2023-24 के वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन और वर्ष 2024-25 की कार्य योजना प्रस्तुत की। बैठक को संयुक्त निदेशक कृषि विनोद जैन, सहायक निदेशक आत्मा शिवप्रकाश कुम्हार, उपनिदेशक पशुपालन डॉ. जगदीश जींनगर, डीडीएम नाबार्ड अशीष जैन भी सम्बोधित किया।

किसानों को कोठियां वितरित

बैठक से पूर्व अतिथियों ने केन्द्र पर नवस्थापित बकरीपालन प्रदर्शन इकाई और कृ षि यंत्र प्रदर्शन इकाई का फीता काटकर शुभारंभ किया। साथ ही, 11 जनजाति महिला किसानों को बीज भंडारण के लिए कोठी का वितरण किया।

शोध सलाहकार समिति की बैठक

कृषि तकनीकों के पेटेंट हासिल करें कृषि वैज्ञानिक

बीकानेर। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय की शोध सलाहकार समिति की बैठक कुलपति डॉ अरुण कुमार की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर के कुलपति डॉ अजीत कुमार कर्नाटक और श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर के पूर्व कुलपति डॉ जीत सिंह संधू विशेषज्ञ के रूप में शामिल हुए। बैठक में रबी सीजन के लिए किसानों के फीडबैक पर आधारित शोध कार्यक्रमों और परिणामों पर मंथन किया गया। बैठक में एमपीएयूएटी कुलपति डॉ अजीत कुमार कर्नाटक और एसकेआरएयू कुलपति डॉ अरुण कुमार ने कृषि तकनीकों के अधिकाधिक पेटेंट लेने पर जोर दिया। वहीं श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर के पूर्व कुलपति डॉ जीत सिंह संधू ने क्षेत्र की समस्याओं के आधार पर शोध कार्य करने का आह्वान किया। इससे पूर्व बैठक का प्रारंभ अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश के द्वारा शोध उपलब्धियों का ब्यौरा प्रस्तुत कर किया गया। साथ ही, पिछली बैठक के सुझावों पर कार्यवाही विवरण प्रस्तुत किया। बैठक में कृषि अनुसंधान केंद्र श्रीगंगानगर के क्षेत्रीय निदेशक अनुसंधान डॉ बीएस मीणा और कृषि अनुसंधान केन्द्र बीकानेर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ एच एल देशवाल ने किसानों की समस्या पर आधारित शोध परिणामों को प्रस्तुत किया। बैठक में विभिन्न विभागाध्यक्षों ने विद्यार्थियों के शोध कार्यों पर आधारित परिणाम प्रस्तुत भी किए। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्रों के वरिष्ठ वैज्ञानिक, प्रधान वैज्ञानिक, अध्यापकों और प्रगतिशील किसानों ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम उडीसा के किसानों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

कम संसाधनो में राई-सरसों की खेती लाभकारी

भरतपुर। सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने कहा कि राई-सरसों कम लागत वाली फसल है। इन फसलों की बुवाई करके किसान अधिक उत्पादन के साथ कम समय में अधिक आमदनी भी प्राप्त कर सकता है। उन्होने बताया कि दूसरी रबी फसलों की तुलना में राई-सरसों की बीज, सिंचाई, कृषि आदान लागत काफी कम है। इसी कारण राई-सरसों की खेती को किसानों के लिए लाभकारी कहा गया है। उन्होंने किसानों से नवीन किस्मो और उन्नत तकनीकियों का उपयोग करते हुए राई-सरसों का उत्पादन बढ़ाने की बात भी कही। डॉ. राय निदेशालय में आयोजित पांच दिवसीय किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन सत्र में बोल रहे थे। उन्होने कहा कि धान की कटाई के बाद खेतो की खाली नहीं रखे। उनमें राई - सरसों की खेती करें जिससे देश मे तिलहन का उत्पादन भी बढ़ेगा और आमदनी मे बढोत्तरी होगी। प्रशिक्षण समन्वयक प्रधान वैज्ञानिक डॉ अशोक शर्मा ने बताया कि देश के उत्तर पूर्वी राज्यों विशेषकर उडीसा, आसाम और झारखण्ड की कृषि जलवायु राई-सरसों की खेती के अनुकूल है। इन परिस्थितियों में अन्य फसलों की अपेक्षा कृषि विविधीकरण के अन्तर्गत राई-सरसों की खेती ही किसानों के लिए लाभदायक है। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को सरसो उत्पादन की उन्नत शस्य क्रियायें, राई-सरसों की विभिन्न किस्मों, मिट्टी जांच, कीट=रोग-खरपतवार प्रबन्धन, जैविक खाद, एकीकृत कृषि प्रणाली आदि विषयों पर वैज्ञानिक जानकारी दी गई। कार्यक्रम में उड़ीसा राज्य के 25 किसानों सहित कृषि अधिकारियों ने भाग लिया। गौरतलब है कि उडीसा सरकार द्वारा मेगा लिफ्ट सिंचाई परियोजना (सीडीपी-एमएलआईपी), क्लस्टर 5 में फसल विविधीकरण कार्यक्रम के तहत सुंदरगढ जिले के किसानों का प्रशिक्षण के लिए भेजा गया था। कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

रोबोटिक्स क्लब के द्वारा आयोजन

सीटीएई में रोबो फुरी-रोबो रेस का आयोजन

उदयपुर। एमपीयूएटी के संघटक सीटीएई के इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग मे रोबोटिक्स क्लब द्वारा एक दिवसीय रोबो फुरी- रोबो रेस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम मे नीमो लेब्स के फाउंडर डायरेक्टर मोहित महेश्वरी और नितिन पुरोहित ने स्टेम एजुकेशन एंड करियर डेवलपमेंट पर अपना व्याख्यान दिया और छात्रों के रोबोटिक्स क्लब द्वारा किये गए नवाचारो और एक्टिविटीज के बारे में बताया। उन्होने बताया की वर्तमान मे कॉलेज शिक्षा को तब तक सफल शिक्षा नहीं कहा जा सकता जब तक इसे इंडस्ट्री प्लेटफार्म पर सफलता पूर्वक अप्लाई नहीं कर लिया जाता। उन्होने सभी छात्रों को आउट ऑफ बॉक्स सोच के साथ स्टार्ट अप्स की तरफ आकर्षित करने का मंत्र भी बताया। इससे पहले विभागाध्यक्ष डॉ नवनीत अग्रवाल ने विभाग की विभिन्न गतिविधियों और छात्रों द्वारा अर्जित विभिन्न आयामों के बारे मे बताया। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि, इस वर्ष भी एआईसीटीई, नई दिल्ली द्वारा आयोजित स्मार्ट इंडिया हेकाथोन मे कॉलेज से दो टीमो का चयन हुआ है उसमे एक टीम इलेक्ट्रॉनिक्स से और दूसरी कंप्यूटर साइंस से है।

छात्रों ने बनाया मिनी रोबोट्स

इसके छात्रों द्वारा विकसित माइक्रो कंट्रोलर से बनाये गये मिनी रोबोट्स की रोबो रेस इवेंट का आयोजन हुआ। रोबोटिक्स क्लब के कोर टीम कोऑर्डिनेटर तनिष्क परिवाला और उनके सहयोगी सदस्यों ने बताया की इवेंट मे कुल 17 टीमो ने इसमे भाग लिया और जूरी मेम्बर्स ने टॉप तीन टीमो को पुरस्कृत किया। विजेता टीम्स को ट्राफी और प्रसंशा पत्र दिये गये। महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. अनुपम भटनागर ने सभी विजेता टीम्स को शुभकामनाएं दी।

अन्नदाता की चिट्ठी

पाठक। प्याज की फसल के पौधों पर सफेद चकते दिखाई दे रहे हैं। यह किस कारण होता है। इसके नियंत्रण के क्या उपाय हैं। जानकारी देवें।

सत्यनारायण, जोधपुर

हलधर टाइम्स। आपने प्याज की फसल में पत्ती पर सफेद चकते दिखाई देने की बात कही है। ऐसा फसल में थ्रिप्स कीट (पर्ण जीवी कीट) प्रकोप के लक्षण नजर आते हैं। इस कीट के प्रकोप होने से पत्तियां कमजोर नजर आती है। पत्ती पर चकते-चकते नजर आते हैं। नियंत्रण हेतु मिथाईल डिमेटोन 25 ईसी अथवा मेलाथियॉन 50 ईसी का एक मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

पाठक। चना फसल की बुवाई की है। खेत में दीमक का प्रकोप नजर आ रहा है। इसके नियंत्रण के लिए उचित दवा का नाम और उपयोग लेने की विधि बताएं।

दिलीप सिंह, मोहनगढ़

हलधर टाइम्स। चने की फसल में दीमक नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस नामक दवा 4 लीटर अथवा तारपीन का तेल 2 लीटर प्रति हैक्टयर की दर से सिंचित फसल में सिंचाई करते समय नाली में बूंद-बूंद टपका कर प्रभावित करे। ताकि, पूरो खेत में पहुंच जाये। दीमक जड़ से तने तक सुराख बनाकर ऊपर मिट्टी की परत चढ़ा देती है। फिर, पौधे को खाकर नष्ट कर देती है। आप बताएं गए तरीके से दीमक का नियंत्रण कर सकते है।

पाठक। देरी से बुवाई की जाने वाली गेहूं किस्म कौनसी है। इन किस्मों की बीज दर कितनी रखी जाती है। विस्तार से जानकारी देंवे।

पूबाराम, झालावाड़

हलधर टाइम्स। आपने देरी से बुवाई की जाने वाली गेहूं किस्म के बारे में जानकारी चाही है। देरी से बोये जाने वाली गेहूं किस्म में राज-3765, 3077, 4083 और राज-4238 शामिल है। इन किस्मों की बीज दर 125 किलो प्रति हैक्टयर रखे। बुवाई से पूर्व बीजों को 2 ग्राम थाइरम अथवा 2.5 ग्राम मैन्कोजेब तथा फिप्रोनिल 5 एससी 6 मिली प्रति किलो बीज दर से उपचारित करें।

पाठक। 4 हैक्टयर क्षेत्र में अमरूद का बगीचा हैं। फसल पर मिलीबग कीट का प्रकोप हो रहा हैं। इसके नियंत्रण के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं। जानकारी देवें।

बाल किशन बैरागी, हिण्डोली, बूंदी

हलधर टाइम्स। कीट नियत्रंण हेतु क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 50 से 100 ग्राम प्रति पेड़ की दर से थाले में 10-15 सेमी की गहराई पर मिलावे। यदि पेड़ पर मिलीबग चढ़ गये हो तो डाईमिथोएट 30 ईसी 1.5 मिली अथवा फेनथियॉन 50 ईसी एक मिली प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

पाठक। फूल गोभी और पत्ता गोभी में पौधों की पत्तियों को लट नुकसान पहुंचा रही है। उपाय बतायें ?

मनोज, जयपुर

हलधर टाइम्स। आपने जैसे बताया कि फूल गोभी और पत्ता गोभी के पौधों में पत्तियों को लटे नुकसान पहुंचा रही है। इन लटों को पत्ती भक्षक लटें कहते हैं। लटों का प्रकोप दिखाई देने पर मैलाथियॉन 5 प्रतिशत अथवा कारबोरिल 5 प्रतिशत चूर्ण का 20-25 किलो प्रति हैक्टयर की दर से भुरकाव करें। मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मि.ली. का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

छोटे में सब कुछ

जीरा

खरपतवार नियंत्रण

जीरे की फसल को खरपतवार से बचाने के लिए बुवाई के तुरंत बाद पैंडामैथलिन एक किलोग्राम (सक्रिय तत्व) प्रति हैक्टयर को 600 लीटर पानी में घोल बनाकर समान रूप से छिड़काव करें। जहां जीरे में पैंडामैथलिन का छिड़काव किया है। वहां पर बाजरे की बुवाई नहीं करें। क्योंकि, इससे बाजरे का अंकुरण प्रभावित होता है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए मिटटी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें अथवा बुवाई के 20 दिन बाद 50 ग्राम (सक्रिय तत्व) आक्सीडाईर्जिल अथवा आक्सीफ्लूरफोन प्रति हैक्टयर का 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। दोनों में से कोई एक नींदानाशी काम में लें। यह दोनों खरपतवारनाशी वातावरण को प्रदूषित नहीं करते है।

मटर

गेरूआ (रस्ट)

रोग का प्रारंभिक लक्षण पौधे के हरे भाग पर पीले, गोल अथवा लंबे धब्बे समूह में पाया जाता है। जो, बाद में भूरे रंग में परिवर्तित हो जाता है। यह रोग नम जलवायु वाले क्षेत्र में अधिक उग्रता से उत्पन्न होता है।

नियंत्रणः- खड़ी फसल मे रोग का प्रकोप होने पर घुलनशील गंधक 3 ग्राम अथवा कार्बेण्डाजिम 1 ग्राम का प्रति लीटर पानी में घोल तैयार करके छिड़काव करें। 15 दिन के बाद छिड़काव को पुनः दोहरावें। इसके अलावा सल्फर पाउडर 25 किग्रा. राख के साथ मिश्रण करके प्रति हैक्टयर की दर से भुरकाव कर सकते है।

मिर्च

सफेद मक्खी

इस कीट का वैज्ञानिक नाम (बेमेसिया टेबेकाई) है। इस कीट के शिशु और वयस्क पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं। कीट पर्ण कुंचन रोग का वाहक होता हैं। एक पौधे से दूसरे पौधे में रोग को फैलाते हैं। नियंत्रण के लिये कीट की प्रारम्भिक अवस्था में नीमतेल 5 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। कीट के अत्यधिक प्रकोप की अवस्था में 15 ग्राम एसीफेट अथवा इमिडाक्लोप्रिड 5 एसएल. की 5 मिली मात्रा 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

जौ में खरपतवार, कीट-रोग प्रबंधन

राजस्थान जौ का सबसे बड़ा उत्पादक प्रदेश हैं। जौ की अच्छी पैदावार, दानों की एकरूपता और उच्च गुणवत्ता के लिए खरपतवार प्रबंधन के साथ कीट-रोग प्रबंधन पर ध्यान देना जरूरी होता हैं। फसल को रोग-कीट से बचाने के लिए समय पर बचाव के उचित उपाय करने आवश्यक है। समय पर शस्य क्रिया नहीं करने के परिणामस्वरूप आशातीत उत्पादन नहीं मिल पाता हैं। गौरतलब है कि जौ की फसल एक माह से सवा माह की हो चुकी हैं।

खरपतवार	खरपतवारनाशी	दवा की मात्रा सक्रिय तत्व/ हैक्टयर	प्रयोग विधि
चोड़ी पत्तीः बथूआ, कृष्णनील, जंगली गाजर	2-4 डी (एस्टर साल्ट)	500 ग्राम (हल्की मिट्टी)	बीजाई के 30-35 दिन बाद 500-700 लीटर पानी में
	2-4 डी (एमाइन साल्ट)	750 ग्राम (भारी मिट्टी)	
	मेटासल्फ्यूरान	4 ग्राम	
संकरी पत्तीः गुल्ली डंडा, जगली जई	आइसोप्रोटरान 75 प्रतिशत	750 ग्राम (हल्की मिट्टी) 1500 ग्राम (भारी मिट्टी)	बीजाई के 30-35 दिन बाद 500-700 लीटर पानी में
	पैंडामेथलिन	750 ग्राम	बीजाई के तुरन्त बाद 3 दिन के अन्दर
दोनो तरह की खरपतवारो के लिए	आइसोप्रोटरान + मेटासल्फ्यूरान	750 ग्राम + 4 ग्राम	बीजाई के 30-35 दिन बाद 500-700 लीटर पानी में।

प्रमुख रोग

आवृत और अनावृत कण्डवा : संक्रमित बाली को सावधानीपूर्वक तोड़कर नष्ट करें।

पीला रतुआ : रोग नियंत्रण के लिए टेबुकोनाजोल 25.90 प्रतिशत ईसी के 0.1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

प्रमुख कीट

चेपा (एफिड) : नियंत्रण हेतु डाइमिथोएट 30 ईसी 1 लीटर दवा प्रति हैक्टयर दर से 700-800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

दीमक : नियंत्रण के लिए प्रति हैक्टयर 4 लीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ईसी दवा को 80-100 किग्रा मिट्टी में मिलाकर खेत में डालें और तुरन्त सिंचाई करें।

जीरे की उन्नत खेती

जीरा एक महत्वपूर्ण मसाले की नगदी फसल है जो कम समय में पक कर तैयार हो जाती हैं। जीरा के लिए ठंडी एवं शुष्क जलवायु उपयुक्त हैं। फसल पकते समय वर्षा और ओस का होना फसल के लिए बहुत ही हानिकारक होता हैं। कभी कभी फसल 100 प्रतिशत तक नष्ट हो जाती हैं। अधिक आर्द्रता एवं नमीयुक्त जलवायु में इसकी खेती नहीं करनी चाहिए।

मृदा- दोमट,बलुई।

उन्नत किस्में- आरजेड़-19, 223, आरएस-1, जीसी-4 आदि।

बीज दर- 12-14 किग्रा. प्रति हैक्टयर।

बीजोपचार- 2 ग्राम कार्बेण्डाजिम प्रति किग्रा. बीज।

बुवाई समय- 30 नवम्बर तक।

बुवाई विधि- जीरा की बुवाई कतारों में अथवा छिड़ककर करनी चाहिए। बुवाई के तुरंत बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए।

खाद-उर्वरक- 5 टन गोबर की खाद प्रति हैक्टयर देनी चाहिए। साथ ही 80 किग्रा यूरिया, 100 किग्रा एसएसपी, 20 किग्रा पोटाश प्रति हैक्टयर।

शीतकालीन सब्जियों में रोग प्रबंधन

सब्जी पौध रोग का आभास किसान को उस स्थिति में होता है, जब फसल की उपज प्रभावित होने लगती है। सब्जी पौध में रोग पनपने के पीछे मुख्य रूप से तीन शक्तियां जिम्मेदार है। इनमें परपोषी, रोगजनक और वातावरण। तीनों ही कारकों की पारस्परिक क्रिया का ही कारण पादप रोग है। आलेख में शीतकालीन सब्जी फसल फूलगोभी-पत्तागोभी, मिर्च और टमाटर को नुकसान पहुंचाने वाले रोग का नियंत्रण बताया गया है।

फूलगोभी–पत्तागोभी

भूरी गलन अथवा लाल सड़न : फसल पर 0.2 से 0.3 ग्राम बोरेक्स प्रति लीटर पानी में घोल तैयार करके छिड़काव करें।

आर्द्र गलन : रोग के लक्षण दिखाई देने पर बोर्डो मिश्रण 2:2:50 अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

काला सड़न : स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 250 मिली ग्राम अथवा कार्बेण्डाजिम 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

झुलसा : मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मिर्च

आर्द्र गलन : बुवाई पूर्व बीज को थाइरम, कैप्टान अथवा ब्लाईटोक्स 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

फल गलना- वैटरोट-थब्बारोग : डाइथेन एम -45 अथवा ब्लाइटोक्स 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के 3 छिड़काव 7-10 दिन के अंतराल पर करे।

मूलग्रंथि (सूत्रकृमि) : पौध रोपण के समय पौधों की रोपाई के स्थान पर 25 किलो कार्बोफ्यूरान 3 जी प्रति हैक्टयर की दर से भूमि में मिलाए।

विषाणु रोग : मैलाथियान 4 मिली प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

टमाटर

झुलसा : मैन्कोजेब 2 ग्राम अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम अथवा रिडोमिल एमजेड 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करे।

पर्णकुंचन और मोजेक (विषाणु रोग) : पौध रोपण के एक पखवाड़े बाद डाईमिथोएट 30 ईसी 1 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। फूल आने पर मैलाथियान 50 ईसी 1 मिली प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़के।

कृषि सलाह

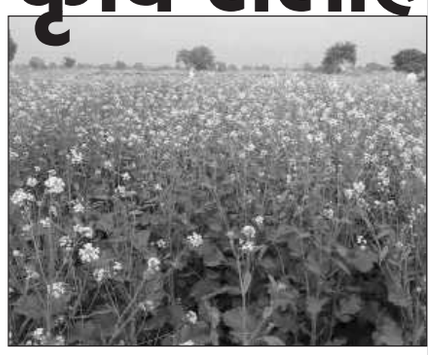

किसान भाईयों कृषि कार्यों को समय पर करने से और उन्नत कृषि विधियां अपनाने से कृषि से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। समय पर कृषि क्रियाएं करने से रोग व कीटों का आक्रमण कम हो जाता है तथा इनसे होने वाली हानि को रोककर उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। किसानों के लिए कृषि कार्यों में इस सप्ताह 18 नवम्बर से 24 नवम्बर तक किए जाने वाले कृषि कार्य निम्न हैं।

- सरसों की फसल में मोयला कीट के प्रकोप पर नजर रखे। मोयला कीट का प्रकोप दिखाई देते ही फेनवालरेट 0.4 डीपी चूर्ण का 15-20 किलो प्रति हैक्टयर की दर से भुरकाव करे।
- गेहूं की बुवाई करें। राज. 4079, राज. 4120, राज. 4037, राज. 6560 और राज. 3765 इस संभाग के लिये गेहूँ की उन्नत किस्में हैं। बुवाई हेतु 100 किलो बीज प्रति हैक्टयर प्रयोग में लेवे तथा कतार से कतार की दूरी 20 से 23 से.मी. रखे। बीजोड़ रोगों से बचाव हेतु 2 ग्राम थाइरम अथवा 2.5 ग्राम मैन्कोजेब का प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। जिन खेतों में अनावृत और पत्ती कण्डवा रोग का प्रकोप हो वहॉ नियंत्रण हेतु कार्बोण्डेजिम 2 ग्राम का प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचारित करें। दीमक के नियंत्रण हेतु 4.5 मि.ली. क्लोरपाइरीफॉस 20 ईसी अथवा फिप्रोनिल 5 एससी 6 मिली प्रति किलो बीज की दर से अथवा क्लोथिएनिडीन 50 डब्लूड्रीजी 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से आवश्यकतानुसार पानी में घोल बनाकर बीजों पर समान रूप से छिड़क कर उपचारित करें और छाया में सुखाने के बाद बुवाई करें। बीजोपचार के 2 घंटे के अंदर बुवाई करें। अन्त में एजेक्टोबेक्टर कल्चर के 3 पैकिट से एक हैक्टयर क्षेत्र के बीजों को उपचारित करें। बीजोपचार में फफूंदनाशी, कीटनाशी कल्चर (FIR) का क्रम रखें। बुवाई के समय प्रति हैक्टयर 45 किलो नत्रजन और 20 किलो फॉस्फेट ऊर कर देवे।
- जीरा, मेथी बुवाई का उचित समय है। आर.एम.टी.-305, आरएमटी-143, पूसा अर्ली बंच, आरएमटी-1 मेथी की तथा जीसी 4, आरजेड-223, आरजेड-209, आरएस-1, गुजरात जीरा-2 और आरजेड-19 जीरे की उन्नत किस्में है। जीरे की बुवाई के लिये बीज दर 12 से 15 किग्रा प्रति हैक्टयर रखे। जीरे के बुवाई कतारों मे (22.5 से 25 से.मी.) में करना लाभप्रद है। बुवाई पूर्व जीरा बीज को 2 ग्राम बाविस्टिन प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें। बुवाई के तुरंत बाद जीरे की फसल को हल्की सिंचाई देवे।
- जौ की बुवाई करें। आरडी-2715, आरडी 2660, आरडी-2624, आर.डी. 2592 और आर.डी.-2552 जौ की उन्नत किस्में है।
- किसी पशु में लगातार बुखार, दस्त, नाक से पानी आना जैसे न्यूमोनिया के लक्षण दिखाई दें, तो उस पशु को तुरंत अन्य पशुओं से पृथक कर देवें तथा निकटतम पशु चिकित्सक से तुरंत संपर्क करें। दिसम्बर माह में तापमान काफी कम हो जाता है जिससे बचाने के लिए पशुओं को रात को छत अथवा छप्पर के नीचे बांधें तथा दिन में पशु को सूर्य की धूप में बांधें। सर्दियों में चारे-बांटे की मात्रा थोड़ी बढ़ा देंवे, क्योंकि सर्दी में उर्जा की आवश्यकता अधिक होती है। यदि खुरपका-मुंहपका, गलघोंटू, पीपीआर, फड़किया, छोटी माता, ठप्पा रोग के टीके नहीं लगवाएं हो तो अब लगवा लें।

सरसों में रोग प्रबन्धन

सरसों उत्पादन में रोग बड़ी समस्या हैं। इस कारण किसान को उपज में नुकसान उठाना पड़ता हैं। कीटनाशक का अनुशंसित मात्रा और समुचित उपयोग बुरा नहीं हैं। लेकिन, किसान भाई इसे एक मात्र सरल और सटीक उपाय समझकर इस पर निर्भर हो गए हैं। इस कारण परभक्षी कीट और परजीवी की संख्या में कमी आ रही हैं। कीटनाशक का दुष्प्रभाव मिट्टी के साथ मानव और पशु स्वास्थ्य पर पड़ रहा हैं। अतः कीट-रोग नियंत्रण के लिए कीटनाशक दवा का कम से कम उपयोग के साथ शस्य क्रिया, यांत्रिक उपाय और जैविक कारक को जहां तक हो सके अपनाया जाये।

सफेद रोली

बुवाई के 50 -70 दिन बाद फसल पर लहसुन बल्ब अथवा नीलगिरी पत्ता (0.2 प्रतिशत डब्ल्यू/वोल्यूम) अथवा रिडोमिल-एमजेड-72 डब्ल्यूपी 2.0 ग्राम अथवा मैन्कोजेब 2.5-3.0 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

तना गलन (स्कलेरोटिनिया गलन)

बुवाई के 50 और 70 दिन बाद कार्बेण्डाजिम 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मृदुरोमिल आसिता, अल्टरनेरिया झुलसा

मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

चूर्णिलआसिता

कैराथेन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।

जीवाणु पत्ती धब्बा/ झुलसा रोग

कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी अथवा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 10 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर सरसों की फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

रबी फसलों में खरपतवार प्रबंधन

आमतौर पर विभिन्न फसलों की पैदावार में खरपतवारों द्वारा 5 से 85 प्रतिशत तक की कमी खरपतवार, कीट-रोग प्रकोप और परिस्थितियों के आधार पर आंकी गई है। खरपतवार फसलों के लिए भूमि में निहित पोषक तत्व और नमी का एक बड़ा हिस्सा शोषित कर लेते हैं। साथ ही, फसल को आवश्यक प्रकाश और स्थान से भी वंचित रखते हैं। फलस्वरुप पौधे की विकास गति धीमी और गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। यह भी देखा गया है कि जहां खरपतवारों का प्रकोप ज्यादा होता है । वहां कीट-रोग का आक्रमण भी बढ़ जाता है।

खरपतवार की रोकथाम

प्रायः देखा गया है कि किसान फसल में कीड-मकोड़ों और रोग-कीट की रोकथाम की ओर तुरन्त ध्यान देते हैं। लेकिन, खरपतवारों के प्रति उदासानी रहते हैं। यहां पर महत्वपूर्ण ध्यान देने योग्य बात यह है कि फसल को हमेशा न तो खरपतवार मुक्त रखा जा सकता है और न ही ऐसा करना आर्थिक दृष्टि से लाभकारी है। अतः क्रान्तिक अवस्था पर खरपतवार नियंत्रण के तरीकों को अपनाकर पैदावार में कमी को रोका जा सकता है। साथ ही, किसान इस बात का ध्यान विशेष रुप से रखें कि उखाड़े गए खरपतवार मेंढों पर न छोड़ें । उन्हें एक जगह गड्ढे में इकट्ठा करें। अन्यथा उनके बीज गिरकर पुनः वर्षा आदि से खेतों में पहुंचकर हानि पहुंचाते हैं।

देश में विभिन्न कारकों द्वारा फसली नुकसान का विवरण

कारक	प्रतिवर्ष हानि प्रतिशत	नुकसान
खरपतवार	37	51, 800 करोड़
रोग	29	40,600 करोड़
कीट	22	30,500 करोड़
अन्य कारण	12	16,600 करोड़

विभिन्न फसलों में खरपतवार द्वारा पोषक तत्वों का पलायन

फसल	नाइट्रोजन (किग्रा/है.)	फॉस्फोरस (किग्रा/है.)	पोटाश (किग्रा/है.)
गेहूं	20-90	2-13	28-54
चना	29-55	3-8	15-72
मसूर	39	5	21
मटर	61-72	7-14	21-105
सरसों	22	3	12
अलसी	32	3	13

रबी फसलों के प्रमुख खरपतवार

किसी स्थान पर खरपतवारों की उपस्थिति वहां की जलवायु, भूमि, संरचना, भूमि में नमी की मात्रा, खेतों में बुवाई की गई पिछली फसल आदि पर निर्भर करती है। इसलिए एक ही फसल में अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग प्रकार के खरपतवार पाये जाते है। विभिन्न रबी फसलों में उगने वाले प्रमुख खरपतवारों में

मोथा, हिरन खुरी, फेलेरिस माइनर , कृष्ण नील, जंगली जई, बथुआ, चौलाई, दूब घास आदि शामिल है।

खरपतवारों की रोकथाम

खरपतवार का नियंत्रण सही समय पर करें। खरपतवारों की रोकथाम निम्नलिखित तरीकों से की जा सकती है।

निवारण विधिः- इस विधि में वह सभी क्रियाएं शामिल हैं। जिनके द्वारा खेतों में खरपतवारों के प्रवेश को रोका जा सकता है। जैसे प्रमाणित बीजों का प्रयोग, अच्छी सड़ी गोबर- कम्पोस्ट खाद का प्रयोग, सिंचाई की नालियों की सफाइ, खेत की तैयारी और बुवाई में प्रयोग किये जाने वाले यंत्रों की प्रयोग से पूर्व अच्छी तरह से सफाई इत्यादि।

सस्य विधिः- गर्मी में खेत की गहरी जुताइ, स्टेल सीड बेड विधि, जीरो टिल सीड ट्रिल अथवा हैप्पी सीडर का प्रयोग, फसल चक्र विधि, अनर्तवर्ती फसल विधि इत्यादि का प्रयोग भी खरपतवारों को नियंत्रित करता है।

यांत्रिक विधिः- फसल की प्रारंभिक अवस्था में बुवाई के 15-45 दिन के मध्य फसलों को खरपतवार से मुक्त रखना जरुरी है। सामान्यतः दो निराई-गुड़ाई, पहली 20-25 और दूसरी 45 दिन बाद करने से खरपतवारों का नियंत्रण प्रभावी ढंग से होता है। इसके लिए परम्परागत कृषि यंत्रों के अतिरिक्त उन्नत नीदानाशक यंत्रों जैसे खींचकर अथवा ढकेलकर चलाये जाने वाले सस्ते हल्के और प्रभावी वीडरों का प्रयोग किया जा सकता है। इन यंत्रों का प्रयोग कतार में बोई गई फसलों में ही सम्भव है।

रासायनिक विधि

शाकनाशी रसायनों का प्रयोगः- वर्तमान समय में मजदूरों की कमी की समस्या को देखते हुए खरपतवारों का नियंत्रण शाकनाशी रसायनों द्वारा करने से जहां एक ओर खरपतवारों का उचित समय पर नियंत्रण हो जाता है । वहीं दूसरी ओर लागत और समय की भी बचत होती है । लेकिन , शाकनाशी नाशकों का उपयोग करते समय यह ध्यान रखना होगा कि उसकी उचित सांद्रता को उचित विधि द्वारा उपयुक्त समय पर प्रयोग करें । ताकि, इनसे समुचित लाभ प्राप्त हो सके । अन्यथा लाभ के बजाय हानि भी हो सकती है। फसलों में उपयोग किये जाने वाले रसायनों का प्रयोग मुख्यतः तीन तरीकों से किया जा सकता है ।

बुवाई से पूर्व भूमि में मिलाकर

इस प्रकार के शाकनाशी को फसल बुवाई के पहले खेत में अंतिम तैयारी करते समय मिला देना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि खेत में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो। जैसे फ्लूक्लोशलिन

अंकुरण के पूर्व छिड़काव

इस तरह के शाकनाशी बुवाई के बाद किन्तु फसल और खरपतवार के अंकुरण के पहले खेत में छिड़क दिये जाते हैं। जहां तक हो सके इनका प्रयोग सल बुवाई के 3 दिन के भीतर करना चाहिए, जैसे पेन्डीमेथालिन।

अंकुरण के बाद छिड़काव

इस प्रकार के शाकनाशी रसायनों का प्रयोग बुवाई के 30-35 दिन बाद किया जाता है। जैसे 2-4 डी, क्लोडिनाफॉप, फेनाक्साप्रांप, सल्फोसल्फ्यूरॉन इत्यादि । जिससे खरपतवार अंकुरण अवस्था में ही समाप्त हो जाते हैं अथवा बाद में नीदा रसायन के प्रभाव से पूर्णतया नष्ट हो जाते हैं।

रसायन प्रयोग में सावधानी

रसायन की जिस फसल के लिए अनुशंसा की गई है उसी में प्रयोग करें। शाकनाशी रसायनों की उचित मात्रा को उचित समय पर छिड़काव करें। छिड़काव के समय खेत में पर्याप्त नमी होना आवश्यक है। पानी की उचित मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। छिड़काव यंत्र को छिड़कने से पहले अच्छी तरह से साफकर लेना चाहिए। छिड़काव के लिये हमेशा फ्लैट फैन नोजल का ही प्रयोग करें। शाकनाशी और पानी के घोल को छानकर छिड़काव करना चाहिये। छिड़काव करते समय विशेष पोषक दस्ताने और चश्मे आदि का प्रयोग करना चाहिये । ताकि, रसायन शरीर पर न पड। छिड़काव के समय मौसम साफ होना चाहिये। हवा की गति तेज नहीं होनी चाहिये। रसायन के खाली डिब्बों को नष्ट करके जमीन में दबा देना चाहिये। शाकनाशी रसायन को खाने की चीजों से दूर रखना चाहिये। शाकनाशी के छिड़काव के बाद शरीर को अच्छी तरह से धो लेना चाहिय। छिड़काव करते समय खाने की वस्तुओं का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

जैवरस आधुनिक कृषि की जरूरत

कृषि रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग के कारण मानव स्वास्थ्य और मृदा स्वास्थ्य के साथ-साथ फसल की पैदावार और गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड रहा है। साथ ही, कृषि लागत भी बढ़ रही है। इस स्थिति को देखते हुए जैविक खेती किसानों के लिए अच्छा विकल्प है। क्योंकि, जैव आदान किसान स्वयं अपने खेत पर तैयार कर सकता है। उल्लेखनीय है कि बाजार में निर्मित विभिन्न जैव पिडकनाशी जैसे वेर्टिसिलियम, बायोपोलारिस, बवेरिया बेसियाना और बी.टी. इत्यादि का मूल्य 500 रूपए प्रति लीटर होने के कारण किसान खरीद नही पाते है, इसलिए जैवरस नामक उत्पाद किसानों के लिए उपयोगी साबित हो सकता है।

जैवरस के लिए आवश्यक सामग्री
गौमूत्र -1.5 से 2 लीटर
नीम पत्तियां-300- 500 ग्राम
नीम खली- 150 - 200 ग्राम
लहसुन पेस्ट-25-30 ग्राम
धतूरा -80-100 ग्राम.

विधि : सबसे पहले 3 से 5 लीटर का एक बर्तन में 2 लीटर गौमूत्र लेकर अच्छी तरह कटी हुई नीम की पत्तियां डालें। इसके बाद नीम की खली डालकर इसे 10 से 15 दिन तक अच्छी तरह से ढक कर रखे। 15 से 20 दिन बाद इसे खोलकर तब तक उबालें, जब तक इसकी मात्रा आधी हो जाए। अब एक दूसरा बर्तन ले, जिसमे लहसुन और धतूरा की निर्धारित मात्रा को 500 लीटर पानी मिलाकर 4 से 5 दिन तक छोड दे। बाद में दोनों को मिलाकर 50 डिग्री तापमान पर उबाल ले और छानकर उत्पाद प्राप्त करे।

तैयार होंने में समय: लगभग 20-25 दिन अथवा 4 सप्ताह में खेत में प्रयोग करने के लिए तैयार हो जाता है।

अनुशंसित दर: वैसे जैविक उत्पाद का फसलो पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नही पड़ता है। किंतु जैवरस को खडी फसल पर 5-7 प्रतिशत का सॉल्यूशन 500 लीटर पानी में और मृदा ड्रेंचिंग(शोधन) हेतु 20-25 प्रतिशत सॉल्यूशन 500 लीटर पानी में करे।

जैविक खेती में नीम कीटनाशी

रासायनिक उर्वरको और कीटनाशक उपयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति और फसल गुणवता में कमी आ रही है। किसानो के द्वारा कीटनाशी रसायनों के लगातार किए गए प्रयोग से हानिकारक कीटों में इनके लिए प्रतिरोधक क्षमता बढती जा रही है। इसके विपरीत प्रकृति में पाये जाने वाले लाभकारी परभक्षी कीटों पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है। ऐसे में शुद्ध फल- सब्जियों का उत्पादन लेने के लिए कीट नियंत्रण की प्रभावी और कम खर्चीली विधियाँ अपनाये जाने की आवश्यता है। ऐसी ही प्रभावी विधि है नीम के पत्तों और निम्बोली से तैयार घोल से कीट नियंत्रण। किसान भाई आसानी से यह कीटनाशक घर पर ही बना सकते हैं। इसका सिर्फ समय पर छिड़काव करना पड़ता है।

कीटनाशक बनाने की विधि

निबोली को एकत्रित करना- एक सूती कपड़ा अथवा मच्छर दानी को निबोली से लदे नीम के पेड़ के नीचे बिछायें । अब टहनियों को हिलायें और पके फलों को कपड़े पर गिराकर एकत्रित करें। अनावश्यक फलों की अलग कर दें। एकत्रित निबोलीयों को पानी में भरी बाल्टी में डाले। हाथ से मसलकर गूदे को बीज से अलग करके बीजो को एकत्रित करें । बीजो को सूती कपड़े पर बिछाकर 7 से 8 दिनों तक सुखावें, फिर हवादार बोरी में भरकर जमा कर लेवें।बीजो के उपर के सख्त छिलकों को तोड़कर अन्दर की गिरी निकाल लें। एकत्रित गिरी को पीसकर महिन पाउडर बना लें। उक्त 2 किलो ग्राम पाउडर को 10 लीटर पानी में भिगोकर रातभर रख दें। अगले दिन सुबह घोल को सूती कपड़े से छान लें, अब छने हुए घोल में 100 लीटर पानी मिलावें।आवश्यकता समझे तो घोल (नीम आधारित जैविक कीटनाशक) की सांद्रता जाँच करा लेवें अन्यथा स्प्रेयर में डाल कर अपने खेत की खड़ी फसल में सिफारिश अनुसार उपयोग में लेवें।

नीम कीटनाशक का उपयोग

नीम की पत्ती और निम्बोली : घोल तैयार करने के लिए 1 किलोग्राम नीम की पत्तियां अथवा निम्बोली की गुठली को चटनीनुमा बारीक पीस लें। इसके बाद इसे कपड़े की पोटली में बांधकर पानी में डुबोकर रात भर रखें। दुसरे दिन सुबह रस निचोड़ने के बाद गुद्दे को फेंक दें। इस रस को 10 लीटर पानी में मिला दें। इस प्रकार 10 प्रतिशत का घोल तैयार हो जायेगा। मिट्टी में पाये जाने वाले हानिकारक कीटों जैसे - दीमक, सफेद लट और सूत्र कृमि जैसे सूक्ष्मजीवों के नियंत्रण में नीम खली का प्रयोग किया जाता है। नीम की पत्ती अथवा नीम खली के पानी के घोल में छिड़काव से पहले टमाटर के पौधों की जड़ों को कुछ देर तक डुबोने से सूत्रकृमियों की संख्या में काफी कमी आती है। टमाटर, बैंगन और मिर्च के खेत में नीम खली (1000 -1200 किलोग्राम /हैक्टयर) भूमि उपचार के रूप में प्रयोग करने से सूत्र कृमि का प्रभावी नियंत्रण होता है।

चने में फली छेदक : चने की फसल में फलीछेदक के नियंत्रण के लिए निम्बोली के घोल के तीन छिड़काव पहला फसल उगने के 20 दिन बाद, दूसरा 40 दिन और तीसरा छिड़काव फूल आने पर करे। 1 - 2 किलोग्राम निम्बोली पाउडर के छिड़काव से प्रति क्विंटल गेहूं, ज्वार और मक्का का 4 से 12 महीनों तक ट्रोगोनेमा कीट से बचाव होता हैं 1 किलोग्राम निम्बोली पाउडर प्रति क्विंटल चना, मटर और अन्य दालों में मिलाकर रखने पर 6 महीने से 12 महीने तक सभी संग्रहित अनाज के कीटों से सुरक्षा इसके तेल (500 मिली. /क्विंटल) को चने में मिलाकर रखने पर 6 महीने तक प्लस बीटल से सुरक्षा होती है । नीम की 2, 4, 8 और 10 प्रतिशत सुखी पत्तियों को गेहूं, ज्वार (अनाजों) में मिलाने पर सभी प्रकार के संग्रहित अनाज के कीटों से 135 दिनों तक अनाज की सुरक्षा नीम आधारित जैविक कीटनाशक (बायो पेस्टीसाइड्स) समन्वित कीट प्रबन्धन में फसलों को कीट व्याधि से बचाने के लिए एक महत्वपूर्ण और उपयुक्त घटक मानी गई है। इनके उपयोग से पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाये फसलों के रस चूसने वाले कीटों, महुआ, थ्रिप्स, सफेद मक्खी इत्यादि पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है

नीम की पत्तियां : एक एकड़ जमीन में छिड़काव के लिए 10-12 किलो पत्तियों का प्रयोग करें। इसका प्रयोग कवक जनित रोगों, सुंडी, माहु, इत्यादि हेतु अत्यंत लाभकारी होता है। 10 लीटर घोल बनाने के लिए 1 किलो पत्तियों को रात भर पानी में भिंगो दें। अगले दिन सुबह पत्तियों को अच्छी तरह कूट कर या पीस कर पानी में मिलकर पतले कपड़े से छान लें। शाम को छिड़काव से पहले इस रस में 10 ग्राम देसी साबुन घोल लें।

नीम की गिरी : नीम की गिरी का 20 लीटर घोल तैयार करने के लिए 1 किलो नीम के बीजों के छिलके उतारकर गिरी को अच्छी प्रकार से कूटें। ध्यान रहे कि इसका तेल न निकले। कुटी हुई गिरी को एक पतले कपड़े में बांधकर रातभर 20 लीटर पानी में भिंगो दें। अगले दिन इस पोटली को मसल-मसलकर निचोड़ दें । इस पानी को छान लें। इस पानी में 20 ग्राम देसी साबुन अथवा 50 ग्राम रीठे का घोल मिला दें। यह घोल दूध के समान सफेद होना चाहिए। इस घोल को कीट व फफूंदनाशक के रूप में प्रयोग किया जाता है।

नीम का तेल : नीम के तेल का 1 लीटर घोल बनाने के लिए 15 से 30 मिली तेल को 1 लीटर पानी में अच्छी तरह घोलकर इसमें 1 ग्राम देसी साबुन अथवा रीठे का घोल मिलाएं। एक एकड़ की फसल में 1 से 3 लीटर तेल की आवश्यकता होती है। इस घोल का प्रयोग बनाने के तुरंत बाद करें । वरना तेल अलग होकर सतह पर फैलने लगता है । जिससे यह घोल प्रभावी नहीं होता। नीम के तेल की छिड़काव से गन्ने की फसल में तना बंधक और सीरस बंधक बीमारियों को नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त नीम के तेल कवक जनित रोगों में भी प्रभावी है।

नीम की खली : कवक (फफूंद नदी)और मिट्टी जनित रोगों के लिए एक एकड़ खेत में 40 किलो नीम की खली को पानी और गौमूत्र में मिलाकर खेत की जुताई करने पहले डालें । ताकि , यह अच्छी तरह मिट्टी में मिल जाए।

नीम की खली का घोल : एक एकड़ की खड़ी फसल में 50 लीटर नीम की खली का घोल का छिड़काव करें। 150 लीटर घोल बनाने के लिए किलोग्राम नीम की खली को 50 लीटर पानी में एक पतले कपड़े में पोटली बनाकर रातभर के लिए भिगो दें। अगले दिन इसे मसलकर और छानकर 50 यह बहुत ही प्रभावकारी कीट-रोग नियंत्रक है।

ट्राइकोग्रामा परजीवी जैविक कीट प्रबंधन

देश में जैविक खेती पर जोर दिया जा रहा है, ट्राइकोग्रामा इसके लिए वरदान सिद्ध हो रहा है। क्योंकि, यह जैविक कीट प्रबंधन का सटीक उपाय है। विश्व में ट्राइकोग्रामा की 18 प्रजातियों का नाशीजीव प्रबंधन में उपयोग हो रहा है। ट्राइकोग्रामा विधि का प्रयोग रसायन-मुक्त कीट नियंत्रण का एकमात्र उपाय है, जिसमें शत्रु-कीट का अंडावस्था में ही नाश हो जाता है। साथ ही, कीटनाशक दवा पर होने वाला खर्च भी बच जाता है। इससे विष- मुक्त खाद्य और सब्जियां उगाई जा सकती है।

ट्राईकोग्रामा

ट्राईकोग्रामा अतिसूक्ष्म आकार का एक मित्र कीट जीव है, जिन्हें खेत में आसानी से देख पाना कठिन है । परन्तु प्रयोगशालाओं में इन्हें आसानी से देखा जा सकता है। इसका बहुगुणन प्रयोगशाला में किया जाता है। बाद में इन्हें खेतो में छोड़ दिया जाता है। यह एक प्रकार का अंड-परजीवी मित्र कीट है, जो शत्रु कीट के अण्डों में अपना अंडा डालकर उन्हें अंडावस्था में ही नष्ट कर देता है। शत्रु कीट के अंडे से इनका (मित्र कीट ट्राइकोग्रामा) वयस्क बाहर आता है, जो पुनः शत्रु कीट में अपना अंडा देता है। इनका जीवन चक्र बहुत छोटा होता है। एक फसल अवधि में इसकी अनेक पीढ़ियाँ आ जाती हैं। इस प्रकार इनकी संख्या शत्रु कीट की तुलना में अनेक गुणा बढ़ जाती है। शत्रु कीट अण्डों को नष्ट करता रहता है ।

देश में प्रजातियां

ट्राइकोग्रामा केलोनिस : ट्राइकोग्रामा प्रजाति ट्राइकोग्रेमेटीड कुल में आता हैं। इस कीट का आकार 0.4 से 0.7 मिमी होता है। इसका पूरा जीवन चक्र 8-10 दिन होता है। यह विभिन्न कीट की 200 कीट प्रजाति को 80-90प्रतिशत तक खेत में नियंत्रित करता है। ट्राइकोग्रामा केलोनिस का प्रयोग धान सब्जियों और दूसरी फसलो में अधिक प्रभावी है ।

ट्राइकोग्रामा जापोनिकम : ट्राइकोग्रामा जापोनिकम का प्रयोग अनेक प्रकार के छेदक (तना छेदक और सुंडी) को नष्ट करने में किया जाता है। अंड़ा अवस्था में ट्राइकोग्रामा जापोनिकम अंडा डालकर इसका जैविक चक्र स्थापित किया जाता है। जिससे छेदक कीट की संख्या में भारी कमी आ जाती है।

कार्य पद्धति : कीट को नष्ट करने की जानकारी आपको ऊपर मिल चुकी है। प्रयोगशाला में इसे चावल के कीट कोर्सेरा के अण्डों पर बहुगुणन किया जाता है। कोर्सेरा के अण्डों की एक महीन सतह 6. 2 के कार्ड पर चिपका कर बनाई जाती है। इस कार्ड को प्रायः ट्राईको-कार्ड नाम से जाना जाता है। सामान्यतः एक कार्ड पर 20 हजार अंडे होते है। इसी कार्ड को फसल के ऊपर लगा दिया जाता है । जिससे यह मित्र कीट निकलकर शत्रु कीट के अण्डों को प्रभावित करते है।

ट्राइकोग्रामा परजीवी प्रयोग मात्रा

छेदक नाशीजीवों से फसल सुरक्षा हेतु 50 हजार ट्राइकोग्रामा केलोनिस प्रजाति से आच्छादित ट्राइको कार्ड को 10 दिन के अन्तराल पर छोड़ा जाता है अथवा 2.5 कार्ड एक हैक्टयर में लगा दिया जाता है। पूरी फसल अवधि में 4-6 बार ट्राइको कार्ड छोड़ने की जरुरत पड़ती है।

लाभ

- इसे प्रयोग करना बहुत ही सरल है। यह पर्यावरण के अनुकूल है।
- मित्र कीटों को किसी भी प्रकार की हानि नहीं करता है।
- यह अत्यधिक न्यून लागत से शत्रु कीटों का प्रभावी नियंत्रण करता है।

भण्डारण

- इसे 5 से 100 डिग्री सेल्सियस तापमान पर 30 दिन तक रखा जा सकता है।

पादप जैव प्रौद्योगिकी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का योगदान

पादप जैव प्रौद्योगिकी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक महत्वपूर्ण योगदान है जो पादपों के उत्पादन, विकास एवं इनके संरक्षण में मदद करती है तथा साथ ही नई और उन्नत तकनीकों के विकास में भी सहायक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुसंधान के क्षेत्र में, जैव प्रौद्योगिकी का आधार है जैसे मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग, न्यूरल नेटवर्क, आँकड़े विश्लेषण आदि । कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से जैव प्रौद्योगिकी कंपनियां अब स्वायत्त रोबोट विकसित करने में सफल हो रही हैं जो फसलों की कटाई जैसे महत्वपूर्ण कृषि कार्यों को मनुष्यों की तुलना में बहुत तेज गति से करते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग प्रयोगशाला प्रक्रियाओं में जैसे न्यूक्लिक अम्ल निष्कर्षण, आणविक जीव विज्ञान और आनुवंशिकी सहित विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यों में भूमिका निभाते जहां आगे के विश्लेषण के लिए डीएनए अथवा आरएनए को जैविक नमूनों से अलग किया जाता है। न्यूक्लिक अम्ल निष्कर्षण में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विशिष्ट अनुप्रयोग अभी भी अनुसंधान अथवा प्रारंभिक विकास चरणों में हो सकते हैं। ये सिस्टम मानवीय हस्तक्षेप को कम करके, त्रुटियों को कम करके और थ्रूपुट को बढ़ाकर न्यूक्लिक एसिड निष्कर्षण प्रक्रिया को सुव्यवस्थित और अनुकूलित करने में मदद करते हैं। जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका को देखते हुए मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग

पौधों के जीनोम (जीन की संरचना) में विभिन्न जटिलताओं को समझने और उन पर कार्य करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से उन विशेष जीनों को पहचानने और संपादित करने की प्रक्रिया को तेज और सटीक बनाया जा सकता है, जो पौधों को कीट, रोग और पर्यावरणीय तनावों से लड़ने में मदद करते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित छवि विश्लेषण तकनीकों का उपयोग कर पौधों के फेनोटाइपिक गुणों का मूल्यांकन किया जा सकता है। यह वैज्ञानिकों को पौधों की ऊंचाई, पत्तियों के आकार, विकास की गति और फल की गुणवत्ता जैसे गुणों का सटीक और विस्तृत विश्लेषण करने में मदद करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके पौधों पर होने वाले कीटों और रोगों की पहचान आसानी से की जा सकती है। एआई आधारित प्रणाली पौधों की छवियों का विश्लेषण कर शुरुआती चरणों में ही रोग और कीट संक्रमण का पता लगाती हैं, जिससे समय रहते उपचार संभव हो पाता है और फसल की गुणवत्ता को बचाया जा सकता है।

एआई द्वारा मिट्टी में निहित पोषक तत्वों का विश्लेषण किया जा सकता है और पौधों को आवश्यक मात्रा में उर्वरक और पोषक तत्व प्रदान करने की योजना बनाई जा सकती है। इससे न केवल मिट्टी की गुणवत्ता सुधरती है, बल्कि पौधों की वृद्धि और फसल की गुणवत्ता भी बढ़ती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से फसल उत्पादन का पूर्वानुमान और योजना बनाने में सहायता मिलती है। इसके माध्यम से किसानों को सही समय पर सही फैसले लेने में सहायता मिलती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से होने वाले लाभ

प्रक्रिया अनुकूलन : कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रक्रिया अनुकूलन में बड़ा योगदान है जहाँ चरघातांकी पैटर्न की पहचान करने से लेकर उनके निष्कर्षण प्रोटोकॉल को अनुकूलित कर प्रयोगात्मक परिणामों के आधार पर बड़े आँकड़े का विश्लेषण करना है।

स्वचालित नमूना प्रबंधनः कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद से निर्देशित रोबोट द्वारा स्वचालित सिस्टम नमूना तैयार कर उनके भौतिक पहलुओं पर कार्य किया जाता हैं, जो मानवीय त्रुटि के जोखिम को कम करने में सहायक हैं।

पूर्वानुमानित मॉडलिंग : कृत्रिम बुद्धिमत्ता निष्कर्षण पैदावार का अनुमान लगाने के लिए ऐतिहासिक आँकड़े के आधार पर पूर्वानुमानित मॉडल विकसित कर सकता है, जिससे शोधकर्ताओं द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से प्रयोगों की योजना बनाई जाती हैं।

छवि विश्लेषण : कुछ निष्कर्षण विधियों में, दृश्य संकेत सफल निष्कर्षण के महत्वपूर्ण संकेतक हैं। एआई-संचालित छवि विश्लेषण इन संकेतों की सटीक व्याख्या करने में मदद कर सकता है।

आँकड़ा एकीकरण : कृत्रिम बुद्धिमत्ता निष्कर्षण प्रि या और उसके परिणामों की व्यापक समझ प्रदान करने के लिए विभिन्न स्रोतों से जैसे की नमूना विशेषताओं एवं प्रयोगात्मक स्थितियों के आधार पर आँकड़ों को एकीकृत कर सकता है।

त्रुटि का पता लगाना : कृत्रिम बुद्धिमत्ता सिस्टम निष्कर्षण के दौरान अपेक्षित परिणामों से विसंगतियों या विचलन का पता लगाकर शोधकर्ताओं को मुद्दों की पहचान करने तथा उन्हें सुधारने में सहायक है।

कार्यप्रवाह एकीकरण : यांत्रिक मशीनें एक साथ कई नमूनों का प्रसंस्करण कर सकती हैं, तथा साथ ही नमूना अनुक्रमण, आँकड़ा प्रबंधन और परिणाम दस्तावेजीकरण की सुविधा के लिए इन प्रणालियों को प्रयोगशाला सूचना प्रबंधन प्रणालियों और अन्य सॉफ्टवेयर समाधानों के साथ एकीकृत किया जा सकता है। यह बड़े पैमाने पर अध्ययन अथवा अधिक नमूनों की मात्रा को संभालने में विशेष रूप से लाभकारी होता है।

गुणवत्ता नियंत्रणः कई स्वचालित प्लेटफार्मों में निष्कर्षण दक्षता और शुद्धता की निगरानी के लिए अंतर्निहित गुणवत्ता नियंत्रण चरण शामिल होते हैं।

उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस : रोबोटिक सिस्टम में आमतौर पर उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस होते हैं, जो शोधकर्ताओं को विभिन्न स्तर की तकनीकी विशेषज्ञता के लिए सुलभ बनाता है।

उपयोग में सावधानियाँ

पादप जैव प्रौद्योगिकी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का उपयोग कई लाभ प्रदान करता है। लेकिन, इसके साथ कुछ चुनौतियाँ और सावधानियाँ भी जुड़ी होती हैं।

पादप जैव प्रौद्योगिकी में एआई के लिए सटीक और उच्च गुणवत्ता का डेटा आवश्यक है। तकनीकी समस्या अथवा सिस्टम विफलता के कारण फसल की देखभाल, रोग प्रबंधन अथवा अन्य कार्य प्रभावित हो सकते हैं। ऐसे में बैकअप प्लान और नियमित निरीक्षण जरूरी है।

एआई द्वारा पौधों को अधिक उत्पादक बनाने के प्रयास में मिट्टी और पर्यावरण पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है। उर्वरकों, पोषक तत्वों और जल के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की गुणवत्ता में गिरावट आ सकती है।

एआई के उपयोग के लिए आवश्यक तकनीकी समझ और उपकरणों का ज्ञान सभी किसानों के पास नहीं होता है। इसलिए, किसानों को एआई उपकरणों के उपयोग में प्रशिक्षित करने के साथ-साथ उनकी आवश्यकताओं और संसाधनों का ध्यान रखना आवश्यक है।

एआई के लिए बहुत अधिक व्यक्ति गत और फसली डेटा की आवश्यकता होती है, जैसे मिट्टी की स्थिति, जलवायु और उपज के आंकड़े। इस डेटा को एकत्रित और संरक्षित करते समय किसानों की गोपनीयता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

प्रेम कटारिया, रमनदीप कौर,
केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर

पादप प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

परती भूमि में करें दलहनी फसलों की खेती

जयपुर। राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, रायपुर (छग.) के द्वारा रबी फसलों पर पादप संरक्षण विषय पर मेरा गांव-मेरा गौरव अभियान के तहत तिल्दा ब्लॉक के केवतारा गांव में किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डॉ. पीके घोष ने कहा कि किसान परती जमीन में चना, मसूर और अरहर की बुवाई करके ना केवल दलहन का उत्पादन बढ़ाने में अपनी सहभागिता निभा सकत है। बल्कि, अपनी आय के साथ-साथ परिवार के पोषण स्तर में भी सुधार कर सकते है। उन्होंने बताया कि भारत बड़ी मात्रा में दलहनी फसलो का आयात करता है। क्योंकि, दालों की खपत, उत्पादन से ज्यादा है। इस स्थिति को देखते हुए केन्द्र सरकार दलहन की खेती को विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से प्रोत्साहित कर रही है। ऐसे में किसानों को कम पानी, कम समय और कम लागत में तैयार होने वाली दलहनी फसलों की खेती को अपनाने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण के दौरान किसानों संस्थान के डॉ. ललित खरबिकर ने किसानों को रबी फसल की सामान्य बीमारियों के प्रबंधन, डा. श्रीधर जे. ने कीट प्रबंधन और डॉ. डेज़ी बसंद्राई ने चना, अरहर और मसूर की उच्च उत्पादकता वाली किस्मों के बारे में जानकारी दी। संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ. पंकज शर्मा ने बताया कि किसानों को फसल संबंधी जानकारी देने के लिए किसानों को फसल कैलेंडर भी प्रदान किया।

पशुओं को लगाएं टीके

कार्यक्रम के दौरान पशु विकास विभाग के सहयोग से पशु स्वास्थ्य शिविर भी सम्पन्न हुआ। इस शिविर में डॉ. रामस्वरूप वर्मा ने पशुओं के टीकाकरण के महत्व, खुरपका-मुंहपका रोग , डॉण् सौम्या दाश ने पशु आहार में खनिज मिश्रण शामिल करने के लाभों पर प्रकाश डाला। डॉ. संदीप अढावी, सरपंच रजनी वर्मा‌य और सचिव मिलन साहू ने पशुपालन से जुड़ी सरकारी योजनओं के बारे में जानकारी दी। शिविर के दौरान कुल 728 पशुओं का टीकाकरण किया गया। बेहतर दुग्ध उत्पादन हेतु 61 परिवारों को खनिज मिश्रण और एंटीबायोटिक दवाओं वितरित किया गया। इस शिविर में कुल 120 किसानों ने भाग लिया।

कमलेश को मिली पीएचड़ी

जयपुर। एमपीयूएटी उदयपुर के डेयरी- खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में सहायक प्राध्यापक कमलेश मीणा को राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमिता एवं प्रबंधन संस्थान (एनआईएफटीईएम) कुंडली- हरियाणा ने आयोजित दीक्षांत समारोह में विद्यावाचस्पति की उपाधि प्रदान की है। उन्होंने अपना शोध कार्य स्वदेशी प्रोबायोटिक लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया का उपयोग कर मक्का आधारित राबड़ी पाउडर का विकास विषय पर पूरा किया। यह शोध कार्य डॉ. नीतू तनेजा के निर्देशन में पूरा किया। गौरतलब है कि कमलेश जयपुर जिले के महारकलां गांव के साधारण किसान परिवार से ताल्लुक रखते है। उन्होंने इस शोध के माध्यम से पारंपरिक भारतीय खाद्य पदार्थों में नए प्रोबायोटिक संभावनाओं को खोजने का प्रयास किया। उनके शोध का मुख्य उद्देश्य उदयपुर क्षेत्र की जनजातीय समुदायों द्वारा बनाई जाने वाली पारंपरिक मक्का आधारित राबड़ी में उपस्थित प्रोबायोटिक बैक्टीरिया की पहचान और उनके स्वास्थ्य लाभकारी गुणों का परीक्षण था।

एमपीयूएटी के कुलपति ने किया अवलोकन

मरूशक्ति के उत्पाद स्वाद और गुणवत्ता में बेहत्तर

बीकानेर। कृषि विश्वविद्यालय उदयपुर के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने एसकेआरएयू बीकानेर की मरूशक्ति इकाई का अवलोकन किया। उन्होंने इकाई में तैयार मिलेट्स उत्पादों को स्वाद और गुणवत्ता में बेहत्तर बताया। डॉ. कर्नाटक , स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार के साथ मशरूशक्ति इकाई पर पहुंचे। यहां सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ विमला डुकवाल ने मरूशक्ति उत्पादों के बारे में जानकारी दी।

उन्होने बताया कि इकाई में तैयार मिलेट्स उत्पादो की मांग तेजी से बढ़ रही है। डॉ कर्नाटक ने बाजरा बिस्किट, केक, खाखरा आदि उत्पादों की जानकारी लेते हुए उत्पादों को स्वाद और गुणवत्ता में बेहत्तर बताया। साथ ही, उत्पाद निर्माण विधि और पैकेजिंग प्रकिया को भी देखा। इस मौके पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अरुण कुमार ने मरूशक्ति इकाई में मिलेट्स के क्वालिटी उत्पाद तैयार किए जा रहे है। विश्वविद्यालय का ध्येय उच्च क्वालिटी के मिलेट्स उत्पाद को देशभर के उपभोक्ताओं तक पहुंचाना है। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ विजय प्रकाश, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के अनुसंधान निदेशक डॉ मनमोहन सुंदरिया, कृषि महाविद्यालय बीकानेर के अधिष्ठाता डॉ पीके. यादव भी मौजूद रहे।

प्रशिक्षण में दी जीरे की उन्नत किस्मों की जानकारी

जैसलमेर। कृषि विज्ञान केन्द्र पोकरण पर सुपारी-मसाला विकास निदेशालय, कालीकट और बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र, अजमेर के संयुक्त तत्वाधान में जीरे की खेती पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजित कार्यक्रम में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. दशरथ प्रसाद ने कहा कि जैसलमेर जिले में जीरा बुवाई का क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है। साथ ही, किसानो को इस फसल से बेहत्तर आय प्राप्त हो रही है। ऐसे में किसानों को उन्नत पैदावार प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों का उपयोग करते हुए बीजोपचार के बाद ही जीरे की बुवाई करना चाहिए। उन्होने बताया कि वर्तमान में जैविक जीरे की मांग बढ़ रही है, इस उद्धेश्य की प्राप्ति के लिए किसान कीट-रोग नियंत्रण के लिए जैव आदान और जैव कीटनाशियों का उपयोग करें। तबीजी केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ मुरलीधर मीणा ने जीरे की उन्नत किस्मो, मृदा स्वास्थ्य और डॉ कृष्ण गोपाल व्यास ने जीरे में खरपतवार प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर चयनित प्रगतिशील किसान दीपा राम, गोपाल सिंह, गायड राम, देऊ राम इत्यादि को जीरा बीज सहित दूसरे जरूरी आदानों का वितरण किया गया।

कचरा निस्तारण में संसाधनो का कुशलतम उपयोग जरूरी

जयपुर। कंजूमर यूनिटी एंड ट्रस्ट सोसाइटी द्वारा शहरी हितधारक परामर्श और विज़निंग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जयपुर नगर निगम के पूर्व उप महापौर मनीष पारीक ने कहा कि कचरा निस्तारण में संसाधनों के कुशलतम उपयोग के साथ जनभागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया। ग्रीनहब के बिजनेस हेड सौरभ सिंघल ने बढ़ती खपत और कचरा उत्पन्न होने के बीच के संबंध पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनकी कंपनी ठोस और गीले कचरे को अलग करती है और गीले कचरे का उपयोग खाद और गैस बनाने में करती है। उन्होंने बताया कि जयपुर में प्रति घर प्रतिदिन लगभग 200-250 ग्राम कचरा उत्पन्न होता है। उद्योग प्रतिनिधि सुनील यादव ने कॉर्न स्टार्च और गन्ने के अवशेष जैसे प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करके प्लास्टिक जैसे दिखने वाले पर्यावरण अनुकूल और बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग बैग बनाने के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में 50 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कटूस की परामर्श और विज़निंग प्रदर्शनी

कृषक-वैज्ञानिक संवाद आयोजित

खेती में आईएफएस मॉडल अपनाएं किसान

झालावाड़। कृषि विज्ञान केन्द्र के द्वारा आत्मा परियोजना के तहत दो दिवसीय कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. टीसी वर्मा ने किसानों को केन्द्र की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। वहीं, परियोजना निदेशक, आत्मा शालू मीणा ने परियोजना के तहत संचालित कृषक-वैज्ञानिक संवाद, किसान गोष्ठी-रात्रि गोष्ठी, कृषक प्रशिक्षण, कृषक भ्रमण कार्यक्रम, किसान समूह, प्रदर्शन, किसान मेला आदि के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में श्री सहायक निदेशक (कृषि विस्तार),रामकुंवार वर्मा कृषि-उद्यान विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. सेवा राम रूण्डला ने किसानों को मृदा नमूना जांच उपरान्त ही उर्वरक प्रबंधन, एकीकृत कृषि प्रणाली (आईएफएस) और फसलों में समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में से बताया। प्राकृतिक खेती के विभिन्न घटकों जैसे बीजामृत, घंजीवमृत, जीवामृत, नीमास्त्र, वानस्पतिक काढा, फसल अवशेष प्रबंधन, हरीखाद आदि के बारे में बताया। केन्द्र पर स्थित विभिन्न जीवंत इकाईयों का भ्रमण भी करवाया गया। सहायक निदेशक (कृषि विस्तार), भूपेन्द्र शेखावत ने कहा कि किसानों को स्मार्ट खेती अपनानी चाहिए। ताकि बढती कृषि लागत को कम किया जा सके और खेती को लाभकारी बनाया जा सके। डॉ. मौहम्मद युनुस, ने किसानों को कृषि में तकनीकी ज्ञान, सोशल मीडिया और सूचना प्रौद्योगिकी के महत्व को विस्तार से समझाया। साथ ही,फसल कटाई उपरान्त कृषि प्रसंस्करण और विपणन प्रबंधन के बारे में बताया। कार्यक्रम में 25 किसानों ने भाग लिया।

प्रयोगात्मक परीक्षाओं का शुभारंभ

कृषि विद्यार्थियों के लिए किताबों से ज्यादा प्रायोगिक अनुभव जरूरी

सिरोही। माधव विश्वविद्यालय के चेयरमैन प्रोफेसर डॉ राजकुमार राणा ने कहा कि कृषि विद्यार्थियों के लिए किताबी शिक्षा से ज्यादा प्रयोगिक अनुभव जरूरी है। क्योंकि, खेत के अनुभव ही विद्यार्थियों को कृषि शिक्षा में पारंगत बनाते है। उन्होंने किसानो के खेतों पर तकनीक आधारित खेती को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता भी जताई। वे, माधव कृषि महाविद्यालय में प्रयोगात्मक परीक्षाओं के शुभारंभ कार्यक्रम में बोल रहे थे। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ भावेश कुमावत ने कहा कि यूजीसी के नियमानुसार अनुसार परीक्षाएं आयोजित करना और तय कार्यक्रम के तहत उच्च शिक्षा प्रदान करना ही विश्वविद्यालय का ध्येय है। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के डीन प्रो वीआर पटेल ने कहा कि हमने पूरे सेमेस्टर में बच्चों की नियमानुसार सिलेबस को पूरा किया है और पाठ्यक्रम के अनुसार परीक्षा कंडक्ट कर रहे हैं। प्रोफेसर डॉ गीतम सिंह ने कहा कि पाठ्यक्रम के अनुसार सभी स्टूडेंट्स ने करके सीखो और देखकर सीखो का नमूना प्रस्तुत कर रहे है। उन्होंने बताया कि सभी छात्रों को एग्रीकल्चर फार्म पर लाइव डेमोंसट्रेशन और तकनीकियों के बारे में जानकारी दी गई।

किसान गोष्ठी में दी आत्मा योजनाओं की जानकारी

श्रीगंगानगर। आत्मा योजना के तहत ग्राम पंचायत 5 जी छोटी सहारणावाली में एक दिवसीय किसान गोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किया गया। उप निदेशक कृषि और परियोजना निदेशक (आत्मा) डॉ. विनोद सिंह गौतम ने आत्मा योजना में दी जाने वाली सुविधाएं भ्रमण, प्रशिक्षण, कृषक पुरस्कार, किसान मेला इत्यादि पर विस्तार से जानकारी दी। गौष्ठी में उप परियोजना निदेशक आत्मा सुदेश कुमार ने रबी फसलों की बिजाई पर जानकारी दी। कार्यक्रम में सेवानिवृत सहायक कृषि अधिकारी सोहनलाल ने भूमि में कार्बनिक पदार्थ की वृद्धि और जैविक कृषि के लाभ के बारे में बताया।

एसएसपी उपयोग में लें किसान

डूंगरपुर। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक परेश पण्ड्या ने बताया कि किसानों के मांग के अनुरूप समय पर उर्वरक उपलब्ध करवाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे है। कृषक डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फॉस्फेट और एनपीके उर्वरकों का अधिक उपयोग कर अच्छी पैदावार ले सकते है। उन्होंने बताया कि एसएसपी एक फास्फोरस युक्त उर्वरक है। जिसमें 16 प्रतिशत फास्फोरस और 11 प्रतिशत सल्फर की मात्रा पाई जाती है। इसमें उपलब्ध सल्फर के कारण यह उर्वरक तिलहन एवं दलहन एवं दलहन फसलों के लिए डीएपी उर्वरक की अपेक्षा अधिक लाभदायक होता है। एक बेग डीएपी के स्थान पर तीन बेग एसएसपी एवं एक बेग यूरिया का संयोजन कर उपयोग करने से पैदावार में बढ़ोतरी होती है। फसलों के मुख्य पोषक तत्वों की संतुलित आपूर्ति के लिए उपयुक्त एनपीके ग्रेडस उर्वरकों का प्रयोग करें।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड की दी जानकारी

सूरतगढ़। आत्मा योजना के तहत पशु विज्ञान केन्द्र सूरतगढ़ में एक दिवसीय किसान गोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किया गया। उप निदेशक कृषि डॉ. विनोद सिंह गौतम ने आत्मा योजना में दी जाने वाली सुविधाएं भ्रमण, प्रशिक्षण, कृषक पुरस्कार, किसान मेला इत्यादि पर जानकारी दी। गौष्ठी में उप परियोजना निदेशक आत्मा सुदेश कुमार ने रबी फसलों की बुआई और मृदा स्वास्थ्य कार्ड से संबंधित जानकारी दी। सहायक कृषि अधिकारी महेन्द्र कुमार ने कृषि विभाग की विभागीय योजनाओं की जानकारी दी।

विकसित भारत में सहकारिता की भूमिका महत्वपूर्ण

अखिल भारतीय सहकार सप्ताह

चूरू। चूरू जिले में 71वें अखिल भारतीय सहकार सप्ताह का शुभारंभ उत्साहपूर्वक किया गया। सप्ताह के तहत दी चूरू सेंट्रल को-ऑपरेटिव बैंक के प्रधान कार्यालय में सहकारिता मंत्रालय की नवीन पहलों के माध्यम से सहकारी आंदोलन को सशक्त बनाने पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। साथ ही, इस वर्ष के सहकार सप्ताह की थीम विकसित भारत के निर्माण में सहकारिता की भूमिका पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। इस दौरान सहकारी आंदोलन को मजबूती प्रदान करने पर विचार-विमर्श हुआ। बैठक में प्रबंध निदेशक मदनलाल ने सहकारिता मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं और पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि मंत्रालय द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायत में सहकारी समितियों का गठन शुरू किया गया है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारिता की पहुंच बढ सके। इसके साथ ही, ग्रामसेवा सहकारी समितियों के कम्प्यूटरीकरण, अन्न भंडारण योजनाओं के तहत गोदाम निर्माण, जन औषधि केंद्र, और प्रधानमंत्री किसान समृद्धि केंद्र जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं पर भी चर्चा की गई। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करना है, ताकि वे सहकारिता की मदद से अधिक सशक्त और आत्मनिर्भर बन सकें। बैठक में बैंक के कर्मचारी और सहकारिता से जुडे अन्य कर्मी भी उपस्थित रहे।

ग्राम उत्कर्ष अभियान का शुभारंभ

गामीण विकास में स्थापित होंगे नए कीर्तिमान

बारां। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के जमुई से धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का शुभारंभ किया। बारां जिले में इस अभियान का जिला स्तरीय समारोह बारां जिला परिषद सभागार में आयोजित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए पशुपालन मंत्री जोराराम कुमावत ने कहा इस अभियान का उद्देश्य आदिवासी समाज के विकास को गति देना है। इसमें 80 हजार करोड़ की योजना के तहत छोटे गांवों और ढाणियों में सड़क निर्माण, पानी की पाइपलाइन, और चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार शामिल है। जिन क्षेत्रों में अभी तक बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं, वहां मोबाईल चिकित्सालय, गैस कनेक्शन, शौचालय, और अन्य आवश्यक सेवाएं प्रदान की जाएंगी। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि जनजातीय परिवारों के विकास के लिए सभी योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएंगे। इस मौके पर विधायक राधेश्याम बैरवा ने कहा कि आदिवासी समाज ने भारत की संस्कृति और आजादी की रक्षा के लिए सदियों तक संघर्ष किया। जिला परिषद् के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी हरीश्चंद मीणा ने कहा कि अभियान के तहत जिले के जनजातीय समुदाय के लोगों को अधिक से अधिक सरकारी योजनाओं से लाभान्वित किया जाएगा।

चना बीज मिनीकिट वितरित

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न योजनाओं के पात्र लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र और बीज मिनी किट का वितरण किया गया। इस दौरान ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग की प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 15 लाभार्थियों को आवास की चाबियां, 15 स्वीकृति पत्र, मनरेगा की अपना खेत अपना काम योजना के स्वीकृति पत्र, स्वास्थ्य विभाग की ओर से लाभार्थियों को आयुष्मान कार्ड, कृषि विभाग की ओर से कृषकों को तारबंदी के स्वीकृति पत्र और मिनी किट (चना 16 किलो) का वितरण किया गया।

अटल भू-जल योजना राज्य स्तरीय कार्यशाला

भू-जल के लिहाज से राजस्थान नॉन सस्टेनेबल जोन में

जयपुर। भू-जल विभाग के प्रमुख शासन सचिव भास्कर ए सावंत ने कहा कि जल को अमृत मानकर सहेजने के प्रयासों पर जोर देते हुए कहा कि प्रदेश के 74 प्रतिशत ब्लॉक भू-जल की दृष्टि से अति दोहित श्रेणी में आ चुके हैं। वहीं पूरा राजस्थान नॉन सस्टेनेबल जोन में आता है। गत वर्ष 17 बिलियन मीटर क्यूब जल का दोहन किया गया। जबकि, कुदरत ने 12 बिलियन मीटर क्यूब जल धरती को वापस लौटाया यानि कि मनुष्य ने प्राप्त जल की तुलना में डेढ गुना जल का अधिक दोहन किया है। सावंत अटल भू-जल योजना के तहत आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि जितने भू-जल का दोहन किया जाता है उसका 83 प्रतिशत भाग कृषि कार्य में, 10-11 प्रतिशत पेयजल में और शेष जल उद्योग में काम में लिया जाता है। हमारा प्रदेश कृषि आधारित प्रदेश है। ऐसे में सर्वाधिक भू-जल का उपयोग कृषि कार्य में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जैसे-जैसे प्रदेश में औद्योगीकरण को बढ़ावा मिल रहा है वैसे-वैसे

ही औद्योगिक कार्यों के लिए भी जल की मांग बढ़ती जा रही है। अटल भू-जल योजना के राज्य नोडल अधिकारी डॉ एस एन भावे ने बताया कि यह योजना देश के 86 जिलों और प्रदेश के 21 जिलों में संचालित की जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश की 65 प्रतिशत जनसंख्या के रोजगार का माध्यम कृषि कार्य है। कृषि के लिए पानी की महती आवश्यकता है। इसलिए गिरते भू-जल स्तर को रोकना अत्यंत जरूरी है। कार्यशाला में भू-जल विभाग के मुख्य अभियंता श्री सूरजभान सिंह, अधीक्षण भूजल वैज्ञानिक डॉ विनय भारद्वाज सहित अन्य प्रतिभागियों ने भी विचार व्यक्त किए।

भू-जल रिचार्ज की जरूरत

उन्होंने कहा कि भू-जल की मैपिंग जैसी नवीनतम तकनीक का उपयोग कर पता लगाया जाए कि किन स्थानों पर भू-जल रिचार्ज किए जाने की आवश्यकता है और भू-जल रिचार्ज करना सफल होगा। उन्होंने कहा कि नियमानुसार 225 वर्ग मीटर से अधिक प्लॉट पर रेन वाटर हार्वेस्टिंग संरचना का निर्माण किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भू-जल संग्रहण के साथ जल संग्रहण तकनीक पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। साथ ही पानी के अपव्यय रोकना बहुत जरूरी है।

पेंशनरों ने उठाई हक की आवाज

उदययपुर। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय में पेंशनर्स वेलफेयर सोसायटी (सीपीएफ-ओपीएस) से जुड़े पेंशनभोगियों ने एक बार फिर अपने हक के लिए आवाज उठाई है। राज्य सरकार के निर्देशानुसार 2023 में यहां सीपीएफ-से-ओपीएस पेंशन योजना शुरू की गई थी, जिसमें पात्र पेंशनभोगियों ने अपनी भविष्य निधि का विश्वविद्यालय अंश जमा किया। इसके बावजूद इन पेंशनर्स को समय पर पेंशन भुगतान नहीं मिल पा रहा है। जानकारी के अनुसार, पेंशनभोगियों ने राज्य सरकार के आदेशानुसार भविष्य निधि के विश्वविद्यालय अंश को ब्याज सहित पीडी खाते में जमा किया था, और उसी जमा राशि से पेंशन का भुगतान किया जाना है। परंतु, इसके बावजूद पेंशन बिल समय पर नहीं बन पा रहे हैं, और यदि बनते भी हैं तो उन्हें जयपुर स्थित राज्य सरकार के कार्यालय में जमा कराने के बाद भी पेंशन जारी होने में 1-2 महीने तक की देरी हो जाती है। परेशान पेंशनभोगियों ने आज विश्वविद्यालय के कुलपति कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया और अपनी समस्याओं का जल्द समाधान करने की मांग की। पेंशनर्स वेलफेयर सोसायटी का कहना है कि अगर उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ, तो वे आने वाले समय में और भी बड़े प्रदर्शन की योजना बनाएंगे।

ई-मण्डी प्लेटफार्मः खेत से होगी जिंस की खरीद

डिजीटल बनेगी प्रदेश की कृषि उपज मंडियां

जयपुर। मुख्यमंत्री बजट घोषणा के तहत जिसों की खरीद सीधे किसान के खेत से सुनिश्चित करने के लिए कृषि विपणन विभाग ने प्रदेश की सभी कृषि उपज मंडियों को डिजीटल बनाने का रोडमैप तैयार किया है। इसके तहत ई-मण्डी प्लेटफार्म का विस्तार किया जायेगा। ताकि, जिंसों की आवक से लेकर ऑक्सन तक की प्रक्रिया ऑनलाइन सम्पादित हो सके। यह जानकारी शासन सचिव कृषि राजन विशाल ने दी।

एमपी मॉडल होगा लागू

उन्होंने बताया कि प्रदेश की मण्डियॉं ई-प्लेटफार्म के माध्यम से डिजिटल होगी। जिससे ई-ऑक्शन के माध्यम से व्यापारियों को किसी भी स्थान पर भौतिक रूप से उपस्थित हुये बिना ही भाव लगाने का अवसर प्राप्त हो सकेगा। बजट घोषणा के क्रियान्वयन के क्रम में मध्यप्रदेश में संचालित ई-मण्डी प्लेटफार्म का अध्ययन करने हेतु राजस्थान राज्य कृषि विपणन विभाग के 5 अधिकारियों का दल उज्जैन और देवास मण्डी के भ्रमण के लिए भेजा गया। अध्ययन दल के द्वारा भ्रमण कर प्राप्त सूचना और व्यवहारिक रूप से संचालित गतिविधियों को समझने के बाद मध्यप्रदेश की मण्डियों में संचालित ई-मण्डी प्लेटफार्म ई-अनुज्ञा, ई-मण्डी, फार्मगेट को प्रदेश में लागू किये जाने के संबंध में सुझाव प्रस्तुत किया।

विकसित होगी सुविधाएं

कृषि विपणन निदेशक राजेश चौहान ने बताया किखेत से खरीद की परिकल्पना को पूर्ण करने और नियमन व्यवस्था को सुदृढ करने के लिए ई-मण्डी प्लेटफार्म विकसित किया जाना प्रस्तावित हैं, जिससे प्रदेश के किसानों और व्यापारियों को बेहतर विपणन सुविधाऐं प्राप्त हो सकेगी। ई-मण्डी प्लेटफार्म के विकसित होने से किसान को अपने खेत से राज्य की किसी भी मण्डी में कृषि जिन्स के विक्रय के विकल्प की सुविधा प्राप्त हो सकेगी यानी कहीं से भी कभी भी ई-मण्डी प्लेटफार्म के माध्यम से विक्रय कर सकेगा।

यह मिलेगा लाभ

उन्होने बताया कि नई व्यवस्था से किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य प्राप्त हो सकेगा। साथ ही, मण्डी समिति को सभी प्रकार की सूचनाए पंजीकृत व्यापार, मण्डी में आने वाले किसान, मण्डी शुल्क, भाव और आवक-जावक रिकॉर्ड एक ही स्थान पर उपलब्ध हो सकेगी। ई-भुगतान की सरल प्रक्रिया से किसानों और व्यापारियों को सुगमता, मण्डी रिकॉर्ड एवं नियमन की दृष्टि से अनियमितता कम हो सकेगी। किसान खेत से अपनी उपज की पूर्ति और व्यापारी की मांग के आधार पर निर्णय ले सकेगें।

राज्यस्तरीय चंद्रभागा पशु मेला कार्यक्रम

मेलों से संस्कृति, उत्पाद और खाद्य को मिलती है नई पहचान

झालावाड़। राज्य स्तरीय चन्द्रभागा पशु मेले में जिला कलक्टर अजय सिंह राठौड़ ने कहा कि चन्द्रभागा मेले को बडे स्तर पर पहचान तभी मिलेगी, जब यहां का स्थानीय उत्पाद, खाद्यान्न और संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम के दौरान जिला कलक्टर द्वारा विधि विधान से भूमि पूजन और झण्डारोहण किया गया। इस दौरान पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. टी.ए. बन्सोड ने जानकारी देते हुए बताया कि श्री चन्द्रभागा पशु मेला 20 नवम्बर तक मेला ग्राउण्ड झालरापाटन में आयोजित किया जाएगा। इस दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर सत्यनारायण आमेटा, जिला परिषद् के मुख्य कार्यकारी अधिकारी शम्भूदयाल मीणा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक चिरंजीलाल मीणा, नगर पालिका झालरापाटन के अधिशासी अधिकारी हेमेन्द्र कुमार, तहसीलदार झालरापाटन नरेन्द्र मीणा, व्यापार संघ झालरापाटन के अध्यक्ष योगेश झाडिया सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्रदेश की ग्राम पंचायतों में स्थापित होगी पौधशाला

जयपुर। बारिश के मौसम में पौधों के लिए अब पंचायतों को वन विभाग पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा। ग्राम पंचायतें स्वयं पौधारोपण के लिए आत्मनिर्भर बनेगी। राजस्थान सरकार के निर्देशानुसार अब प्रत्येक ग्राम पंचायत में पंचायत पौधशालाएं तैयार की जाएंगी। सभी में 5-5 हजार से अधिक पौधे विकसित किए जाएंगे। यह जानकारी ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की समीक्षा बैठक में दी गई। पौधशाला के लिए पंचायत समिति स्तर पर सहायक अभियंता ईजीएस और ग्राम पंचायत स्तर पर ग्राम विकास अधिकारी को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

मेट अगर होंगे ब्लैकलिस्ट

महात्मा गांधी नरेगा कार्यों में अब मेट की लापरवाही उन्हें ब्लैकलिस्ट करा सकती हैं। एनएमएमएस एप से दर्ज श्रमिकों की उपस्थिति पर ब्लॉक स्तर से नियमित निगरानी रखी जाएगी। जिन कार्यों की मस्टररोल में अनियमितताएं पाई जाती है, उन अधिकृत मेट को ब्लैकलिस्ट किया जाकर उनकी आईडी भी डिलिट की जाए। पंचायत समिति के विकास अधिकारी ऐसी अनियमितता एवं शून्य टास्क वाली मस्टररोल पर भुगतान नहीं करेंगे।

वीसीआई दल ने कॉलेज में लिया सुविधाओं का जायजा

जोधपुर। भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् (वी.सी.आई.), नई दिल्ली द्वारा गठित तीन सदस्यीय निरीक्षण दल द्वारा वेटरनरी महाविद्यालय, जोधपुर का निरीक्षण कर वीसीआई. के न्यूनतम मानकों के आधार पर उपलब्ध भौतिक सुविधाओ, बुनियादी ढांचे और मानव संसाधन का जायजा लिया। महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. (डा.) शिव शर्मा ने बताया कि तीन सदस्यीय निरीक्षण दल में वेंकटेश्वर वेटरनरी विश्वविद्यालय तिरुपति के डॉ एलएसएस. वारा प्रसाद रेड्डी, महाराष्ट्र वेटरनरी विश्वविद्यालय के डॉ. एवी भोंसले ओर पं दीनदयाल उपाध्याय वेटरनरी विश्वविद्यालय मथुरा के डॉ. मुकुल आनंद शामिल रहे। उन्होंने दल के सदस्यों को पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से महाविद्यालय के शैक्षणिक विभागों और पशुचिकित्सालय संकुल में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी दी।

त्रिपुरा के किसानों को ब्रॉयलर खरगोश का किया वितरण

किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

टोंक। केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान अविकागनर और कृषि विज्ञान केंद्र, ऊनाकोटी (त्रिपुरा) के संयुक्त तत्वावधान में नार्थ ईस्ट उपयोजना (एनईएच) के तहत किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में किसानों को खरगोश पालन से आय बढ़ौत्तरी के गुर बताएं गए। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डॉ. अरूण कुमार तोमर ने बताया कि नार्थ ईस्ट के राज्यों मे ब्राइलर खरगोश को बढवा देने के लिए संस्थान ने एक अभिनव पहल की है। जिसके तहत यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ है। नार्थ ईस्ट उपयोजना के नोडल अधिकारी डॉ रणजीत सिंह गोदारा और डॉ अरविंद सोनी ने बताया कि प्रशिक्षण पाने वाले किसानों को ब्रोयलर खरगोश पालन के लिए 124 खरगोश, खरगोश पिंजरा, खरगोश फीड, सब्जियां के बीज का का वितरण किया गया। एक किसान परिवार को एक नर खरगोश, दो मादा खरगोश, तीन खरगोश पिंजरा, 25 किलो खरगोश फीड दिया गया।

तकनीकी पार्क का किया भ्रमण

बीएन अकेडमी स्कूल नरवरिया-जयपुर के स्टूडेंट्स ने केन्द्रीय भेड़ अनुसंधान केन्द्र का भ्रमण किया। इस मौके पर संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अमर सिंह मीना ने विद्यार्थियों को दुम्बा भेड़, अविशान भेड, खरगोश सेक्टर और टेक्नोलॉजी पार्क के बारे में जानकारी दी।

मरू भूमि में हरे चारे की बेहत्तर संभावनाएं

जई बीज वितरण कार्यक्रम

जैसलमेर। क्षेत्रीय चारा केन्द्र सूरतगढ-श्रीगंगानगर के द्वारा एक दिवसीय चारा उत्पादन पर प्रशिक्षण और जई बीज वितरण कार्यक्रम का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र, पोकरण पर किया गया। कार्यक्रम के दौरान किसानों को चारा उत्पादन, खाद-उर्वरक उपयोग और चारा किस्मों के बारे में जानकारी दी गई। केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ दशरथ प्रसाद ने चारा फसलों की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि हरे चारे से पशुओं के दुग्धोत्पादन में वृद्धि होती है । साथ ही, उसका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। क्षेत्रीय चारा केन्द्र सूरतगढ के निदेशक बिजेन्द्र कोली ने ज्वार, मक्का, अजोला, नेपियर घास, चारा बीट, कांटे रहित नागफनी और मोरिंगा चारे की खेती की प्रौद्योगिकियों , जई की उन्नत किस्मों, बुवाई का समय, सिंचाई, उर्वरक की मात्रा जानकारी प्रदान की । केन्द्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ राम निवास ने बताया कि पशुपालन के लिए हरे चारे की उपयोगिता, महत्व, आधुनिक चारा उत्पादन और संरक्षण प्रौद्योगिकियों के बारे में किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए जानकारी दी। कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को चारा प्रदर्शन इकाई के तौर पर जई फसल बीज केंट किस्म का वितरण किया गया।

कुलपति ने पशु शिक्षा सुविधाओं की ली जानकारी

बीकानेर। राजस्थान पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय, के संघटक और सम्बद्ध महाविद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण पशुचिकित्सा शिक्षा और उपलब्ध सुविधाओं को लेकर विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित सभी डीन-डॉयरेक्टर से हाइब्रिड मोड पर रूबरू हुए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय को लघु-दीर्घकालीन प्लानिंग करके उसके अनुरूप कार्यों को सम्पादित करना होगा। कुलपति ने क्लासरूम शैक्षणिक व्यवस्था को केन्द्रिकृत करने का भी सुझाव दिया। ताकि सभी संघटक महाविद्यालय, गुणवत्तापूर्ण व्याख्यानों का लाभ उठा सकें। बैठक का समन्वय करते हुए अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच ने पशुपालकों हेतु नि:शुल्क मेडिसिन उपलब्ध करवाने के विकल्प पर चर्चा की गई। विश्वविद्यालयों के शिक्षकों के करियर एडवासमेट के तहत प्रमोशन, रिक्त शैक्षणिक पदों पर भर्तियें पर भी चर्चा हुई।

पशु नेत्र जांच शिविर आयोजित

जयपुर। गोपालन विभाग और राजस्थान गो सेवा आयोग के संयुक्त तत्वावाधान में गो-पुनर्वास केन्द्र, हिंगोनिया में पशु नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में पशुविज्ञान महाविद्यालय के नेत्र रोग विशेशज्ञ डॉ. सुरेश कुमार झीरवाल ने 27 गोवंश की आखों की जॉच की। जांच के दौरान कुछ गौवंश में मोतियाबिन्द, ड्रमोईड एवं रेटिनल डिजनेरेशन जैसे रोग पाये गये। 9 गौवंश को नेत्र शल्य चिकित्सा किये जाने हेतु पंजीयन किया गया । ताकि गौवंश की ऑखो की रोशनी लौटायी जा सके। गौ-सेवा आयोग के सचिव डॉ. राधेश्याम मीना नक नेत्र शल्य चिकित्सा के लिए अधिकारियों को आवश्यक प्रबंध के बारे में सुझाव दिये गये ।

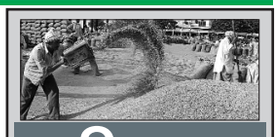

कृषि जिंस भाव

कोटा

सरसों	5000-6160
सोयाबीन	3800-4600
चना	6500-6800
बाजरा	1800-2600
गेहूं	2600-3260
जौ	2000-2460
मक्का	1900-2500

जोधपुर

सरसों	5400-6100
बाजरा	1800-2500
गेहूं	2000-3100
ईसबगोल	10000-12550
मूंग	6000-7500
चना	5800-7000
ग्वार	4000-4786

अलवर

सरसों	5200-6200
कपास	6500-7400
बाजरा	1700-2300
मक्का	2000-2550
जौ	2000-2400
गेहूं	2300-3100

बीकानेर

सरसों	5000-6200
ईसबगोल	10500-12300
मूंग	6000-7300
ग्वार	4500-4875
ज्वार	2000-3200

जयपुर

बाजरा	2000-2300
जौ	2000-2650
सरसों	5300-5900

दौसा

सरसों	5000-5900
गेहूं	1900-2650
ग्वार	4000-5100
चना	4000-6570
बाजरा	1200-2400

झुंझुनूं

सरसों	5000-6000
ग्वार	4000-5166
जौ	1500-2500
बाजरा	1500-2360
चना	6000-6820

सवाईमाधोपुर

सरसों	5600-5873
चना	6500-6755
सोयाबीन	3900-4620
बाजरा	1000-2300

अश्वों का घातक जीवाणु रोग टेटनस

घोड़े में टेटनस एक संक्रामक रोग है जो एक बैक्टीरिया, क्लोस्ट्रीडियम टेटानी के कारण होता है। जो मिट्टी और गोबर में पाया जाता है। घावों के माध्यम से घोड़े के शरीर में प्रवेश करता है और टेटनस जीवाणु विष उत्पन्न करता है। यह विष तंत्रिका तंतु प्रणाली को प्रभावित करता ह। जिससे मांसपेशियों में अकड़न और संकुचन होता है। घोड़े विशेष रूप से टिटनेस के प्रति संवेदनशील होते हैं। क्योंकि, चरते समय वे घायल हो जाते हैं और अक्सर बैक्टीरिया के संपर्क में आते हैं।

स्वच्छता और टीकाकरण जरूरी

टेटनस एक विश्वव्यापी बीमारी है और प्रभावित अश्व में 80 प्रतिशत तक मृत्यु हो जाती है। यह बीमारी अभी भी दुनिया भर में सालाना लगभग 50,000 मौतों का कारण बनती है। विशेष रूप से उन क्षेत्रों को प्रभावित करती है जहां स्वच्छता की कमी है और टीकाकरण दर कम है।

जीवाणु का प्रवेश ऐसे

क्लोस्ट्रीडियम टेटानी जीवाणु घाव अथवा पाचन तंत्र के माध्यम से प्रवेश करता है। नैदानिक लक्षण कुछ दिनों अथवा हफ्तों की इन्क्युबेस अवधि के बाद दिखाई देते हैं। बैक्टीरिया टिटानोस्पास्मिन और टेटानोलिसिन नामक टोक्सिन्स पैदा करता है। टेटानोलिसिन ऊतकों को नुकसान पहुंचाता है और टेटानोस्पास्मिन तंत्रिका अंत तक पहुंचता है। जहां यह न्यूरोट्रांसमीटर के स्त्रवन को रोकता है।

यह होती है समस्या

इसके प्रवेश करने से अश्व की मांसपेशियों की ऐठन के परिणामस्वरूप चलने में और सांस लेने में तकलीफ होती है। भोजन को चबाना और निगलना भी मुश्किल हो जाता है। कान सीधे और स्थिर खड़े हो जाते हैं और अश्व पूंछ को ऊंचा रखता है। अन्य विशिष्ट लक्षण में हाइपरस्थेसिया हो जाना और निक्टिटेटिंग झिल्ली का बाहर निकलना है। मृत्यु आमतौर पर श्वसन पक्षाघात के कारण होती है। टिटनस का जीवाणु आमतौर पर घावों अथवा परिगलित ऊतकों में बढ़ता है । जहां ऑक्सीजन की आपूर्ति बहुत कम होती है। घाव की घटना और पहले लक्षणों के बीच का समय 2 दिनों से 2 महीने तक होता है। घोड़ों में टेटनस के बैक्टीरिया सामान्य रूप जीवाणु से आहार नाल के कोलन और सिकम क्षेत्र में पाए जा सकते हैं और टिटनस बिना किसी दृश्य घाव के भी हो सकता है। इसलिए घोड़ों को नियमित रूप से टिटनेस का टीका लगवाना चाहिए।

लक्षण से पहचान

टिटनेस का पहला नैदानिक लक्षण जबड़े और पिछले पैरों की मांसपेशियों में अकड़न होती है। पहले संकेतों के 24 घंटों के भीतर घोड़ा अपने पूरे शरीर में अधिक लक्षण दिखाने लगता है। मांसपेशियों पर छिटपुट ऐंठन के साथ शरीर अतिसंवेदनशील हो जाता है। बीमारी के इस दौर में घोड़ा होश में रहता है। जैस-जैसे बीमारी बढ़ती है घोड़ा कठोर होता जाता है और खाने के लिए अपने सिर को ऊपर अथवा नीचे उठाने में असमर्थ हो जाता है। पैर, कान और पूंछ सभी कठोर होने लगते है। घोड़े की चाल असामान्य और कठिन हो जाती है। एक संकेत जो इसे अन्य बीमारियों से अलग करता है ,वह तीसरी पलक का बाहर आना है जो आंख के अंदरूनी कोने पर दिखाई देता है। घोड़े को पसीना आता है और हृदय गति तेज हो जाती है। जैस-जैसे बीमारी अपने चरम पर पहुँचती है, घोड़े का तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है जिससे मस्तिष्क को भी क्षति भी हो सकती है। युवा अश्व वृद्ध अश्वों की तुलना में अधिक बार और अधिक गंभीर रूप से टिटनेस से प्रभावित होते हैं।

निवारणः टिटनस टीकाकरण वाली घोड़ी से पैदा हुए बच्चों का प्राथमिक टेटनस टीकाकरण 6 महीने की उम्र के पश्चात् शुरू करना चाहिए। जिन घोड़ों को पहली बार टेटनस टीका लगाया जाता है, उन्हें लगभग चार सप्ताह बाद एक बूस्टर इंजेक्शन की आवश्यकता होती है और नौ महीने बाद तीसरी खुराक की जरूरत होती है और उसके बाद सालाना बूस्टर दिया जाता है। नये बछेरों को जन्म के उपरान्त टिटनस से बचाने के गर्भवती घोड़ी को ब्याने से एक महीने पहले टिटनस वेक्सिन का टीका लगाया जाता है।

उपचार और रोकथाम

टेटनस के उपचार के लिए एक व्यस्क अश्व को टिटनस एंटी टॉक्साइड दिया जाता है उपचार के लिए टीएटी और टीटी दोनों को एक साथ प्रयोग में लिया जाता है। प्रभावित अश्व को टेटनस एंटीटॉक्सिनए टेटनस टॉक्सोइड के साथ एंटीबायोटिक दवाए भी जल्द से जल्द शुरू किया जाना चाहिए। मांसपेशियों की ऐंठन को कम करने और घोड़े को शांत करने के लिए ट्रैक्विलाइज़र और मांसपेशियों को आराम देने वाली दवाई भी देनी चाहिए। अश्व को एक शांत क्षेत्र प्रदान किया जाना चाहिए। घोड़े के गिरने की स्थिति में आपातकालीन स्लिंग भी मदद करते हैं। यदि घोड़ा चारा नहीं ले सकता है तो उसे पेट की नली के माध्यम से खिलाना चाहिए। टिटनेस से बचाव के लिए घोड़ी के ब्याने से एक महिना पहले 5 उस टीएटी लगवाने और चोट लगने के बाद भी ।

डॉ. सज्जन कुमार, डॉ. तिरुमला राव तल्लुरी,
अश्व उत्पादन केंद्र, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद, बीकानेर

घर बैठे हलधर टाइम्स मंगाने के लिए भर कर भेजें।

सदस्यता फार्म

दिनांक .....

हलधर टाइम्स सासाहिक ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पशुपालन, सहकारिता, ग्रामीण विकास, मशीनरी व संचार से जुड़ी आधुनिकतम एवं तकनीकी जानकारी किसानों व ग्रामीणों तक पहुंचाकर ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित कर रहा है। हलधर टाइम्स समय-समय पर भिन्न-भिन्न विषयों पर विशेषांकों का प्रकाशन भी करता है तथा अपने ग्राहकों को बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के भेजता है। अत: मुझे / हमें भी अंग्राकित पते पर हलधर टाइम्स डाक / कोरियर द्वारा भेजें।

सदस्यता राशि

☐ एक वर्ष रु. 250/- ☐ दो वर्ष रु. 450/- ☐ तीन वर्ष रु. 600/- ☐ पांच वर्ष रु. 1000/-

डाक से नियमित रुप से निम्न पते पर हलधर टाइम्स भेजने के लिए डिमान्ड ड्राफ्ट/मनीऑर्डर **हलधर टाइम्स** के नाम भेज रहा हूं।

नाम / संस्था का नाम .....

ग्राम ..... पोस्ट.....

तहसील ..... जिला.....

फोन ..... पिन कोड ☐☐☐☐☐☐

राशि (रुपए) ..... बैंक का नाम .....

डिमान्ड ड्राफ्ट / मनीऑर्डर क्रमांक ☐☐☐☐☐☐ (डीडी/एमओ हलधर टाइम्स के नाम भेजें)

•सदस्यता रजिस्ट्रेशन क्रं. .....रसीद क्रं. .....

•मुझें हलधर टाइम्स के ग्राहक बनने की प्रेरणा (नाम, पता व अंशकालिक संवाददाता/प्रतिनिधि की सील) .....

..... ने दी है।

दिनांक ..... हस्ताक्षर

सदस्यता हेतु लिखे प्रसार प्रभारी →

हलधर टाइम्स

सी-17, पुरोहित जी का बास, सरकारी मिडिल स्कूल के पास, 22 गोदाम, जयपुर-302006

Ph.: 0141-4021593 ■ Telefax : 0141-2213100 ■ Visit us : www.haldhartimes.in

सिंचाई से खेती में नई करवट 3 साल में आमदनी 12 लाख

राजूराम मूंड
मो. : 9772502116

किसान राजूराम मूंड का कहना है कि परिवार के पास जमीन का रकबा तो काफी बड़ा था। लेकिन, प्रभावी कृषि प्रबंधन के अभाव में परिवार के आर्थिक हालात ठीक नही थे। इस कारण सूरत संभालने के साथ ही आजीविका के लिए संघर्ष करना पड़ा। लेकिन, अब खेती के साथ आमदनी का आंकड़ा नई करवट ले रहा है। यह संभव हुआ है खेतों में सिंचाई सुविधा के विकास से। तीन साल पहले खुदवाएं कुएं से रबी-खरीफ के साथ-साथ सब्जी फसलों का अच्छा उत्पादन मिलने लगा है। इससे सालाना बचत का आंकड़ा 10-12 लाख रूपए सालाना तक पहुंच चुका है।

ईशरोल, बाड़मेर। बिन पानी सब सून की यह कहानी है किसान राजूराम मूंड की। जिन्होंने तीन साल के भीतर खेती से आमदनी का आंकड़ा सात से आठ गुना तक बढ़ा दिया है। किसान राजूराम का कहना है कि खेती में सब पानी की माया है। उम्र भर खेती की और पानी होने ना होने के खट्टे-मीठे अनुभव लिए। तीन साल पहले तक सबकुछ पहले जैसा ही था। लेकिन, कुआं खुदवाने के बाद से खेती से आमदनी का ग्राफ बढने लगा है। सब्जी और परम्परागत फसलों से बचत का आंकड़ा 10-12 लाख रूपए सालाना तक पहुंच चुका है। किसान राजूराम ने हलधर टाइम्स को बताया कि कभी स्कूल का मुंह नहीं देखा। सूरत संभालने के बाद से ही बरसाती फसलों का उत्पादन लेता आ रहा हूँ। इस कारण तीन साल पहले तक लाख से डेढ़ लाख रूपए की आमदनी परम्परागत फसलों के उत्पादन से मिलती थी। लेकिन, सिंचाई की सुविधा होने के बाद खेती नई करवट ले रही है। इस कारण साल दर साल आमदनी का आंकड़ा भी बढ़ने लगा है। उन्होने बताया कि तीन साल पहले जमा पूंजी से कुआं खुदवाया। जल बचत के लिए फव्वारा सिंचाई को अपनाया। इसके परिणाम देखने के बाद सब्जी फसलों का उत्पादन भी लेना शुरू किया। इससे आमदनी में अच्छी बढौत्तरी देखने को मिल रही है। उन्होंने बताया कि सब्जी फसलों से ज्यादा आमदनी के लिए गांव में ही सब्जी बिक्री का कार्य करता हूँ। इससे फसल के रिटेल भाव मिल जाते है। जलबचत के लिए अब ड्रिप और मल्च का उपयोग कर रहा हूँ। परम्परागत फसलों में अरंड़ी, मूंग, मूंगफली और जीरा का उत्पादन लेता हूँ। परम्परागत फसलों से सालाना 6-7 लाख रूपए की आमदनी मिल जाती है।

मिर्च का बढ़ाया दायरा

उन्होंने बताया कि सब्जी फसलों की शुरूआत 5-6 बिस्वा जमीन से की थी। समय के साथ क्षेत्रफल भी बढ़ाया। अब मिर्च की खेती पर ज्यादा फोकस करता हूँ। क्योंकि, इस फसल में बचत ज्यादा है। वहीं, बाजार मांग भी बनी रहती है। उन्होंने बताया कि मिर्च की खेती दो बीघा क्षेत्र में करता हूँ। जबकि, बैंगन, गोभी और टमाटर की खेती एक-एक बीघा क्षेत्र में करता हूँ। इन फसलों से सालाना 5-6 लाख रूपए की आमदनी मिल जाती है।

उन्नत पशुधन

उन्होने बताया कि पशुधन में मेरे पास 1 भैंस और 5 गाय है। उन्होंने बताया कि दुग्ध उत्पादन से परिवार के दैनिक खर्च के साथ पशुधन का खर्च निकल जाता है। पशु अपशिष्ट से कम्पोस्ट खाद तैयार करके सब्जी फसलों में उपयोग कर रहा हूँ।

स्टोरी इनपुटः डॉ. रावताराम भाखर, कैलाश कुमार,
पशु चिकित्सालय, ईशरोल, बाड़मेर

दुग्ध से मिला राम का प्रसाद, सकल आय 6 लाख

राम प्रसाद शर्मा
मो. : 9521825232

उस समय पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया। अब याद आता है, पढ़ लेते तो कुछ बन जाते। लेकिन, हम तो पशु चराने में ही रह गए। अब पशुधन के सहारे ही जीवनपायन कर रहा हूँ। खेती और पशुपालन से मिलने वाली आमदनी से जीवन में काफी तरक्की पाई है। अब सब्जी खेती की दिशा में कदम बढ़ाया है। क्योंकि, इसकी खेती से अच्छी आमदनी होते मैने अपनी आंखो से देखा और महसूस किया है। किसान रामप्रसाद शर्मा के यह अनुभव है। रामप्रसाद को पशुपालन और खेती से सालाना 5-6 लाख रूपए की शुद्ध कमाई हो रही है।

रामपुरा फूलियांकला, भीलवाड़ा। ढलती उम्र में कृषि नवाचार की ललक रखने वाला किसान है रामप्रसाद शर्मा। रामप्रसाद ने खेती से ज्यादा आमदनी का प्रसाद पशुधन से पाया है। लेकिन, अब कृषि विज्ञान केन्द्र, शाहपुरा से जुड़कर कृषि आमदनी बढ़ाने के प्रयास में जुटे हुए है। गौरतलब है कि किसान रामप्रसाद दुग्ध उत्पादन से प्रतिमाह 20-25 हजार रूपए की आय प्राप्त कर रहा है। किसान रामप्रसाद ने बताया कि परिवार की आर्थिक तरक्की का रास्ता पशुपालन से ही खुला है। सालाना ढ़ाई-तीन लाख रूपए की आमदनी पशुपालन से मिल रही है। वहीं, इतनी ही आमदनी खेती से मिलती है। उन्होंने बताया कि खेती में जोखिम ज्यादा रहता हैं। लेकिन, पशुधन बेहत्तर प्रबंधन से दैनिक आय प्रदान करता है। इस लिहाज से पशुधन से अच्छा कोई दूसरा व्यवसाय नहीं है। गौरतलब है कि किसान रामप्रसाद 8वीं पास करने के बाद खेती से जुड़ा है।

के रूप में अपनाने के बाद मैंने जमीन पर परम्परागत फसलों के साथ चारा फसलों का दायरा बढ़ा दिया है। ताकि, अकाल की स्थिति में चारे की समस्या से दो-चार नहीं होना पड़े। परम्परागत फसल में मक्का, उड़द, ज्वार, सरसों , कपास, गेहूं और चने का उत्पादन करता हूँ। इससे सालाना ढ़ाई से तीन लाख रूपए की आमदनी मिल जाती है। सिंचाई के लिए मेरे पास कुआं है।

20 हजार रूपए की बचत

पशुधन में मेरे पास आधा दर्जन से अधिक उन्नत नस्ल की भैंस है। इनसे प्रतिदिन 40 किलोग्राम दुग्ध का उत्पादन हो जाता है। इसमें से एक समय का दुग्ध डेयरी को बिक्री कर देता हूँ। प्रतिमाह 35-40 हजार रूपए की आमदनी होती है। इसमें से 20-22 हजार रूपए का शुद्ध मुनाफा मिल जाता है।

अब सब्जी की ओर

उन्होंने बताया कि कृषि विज्ञान केन्द्र से जुडने के बाद काफी कुछ नया सीखने को मिल रहा है। पशु आहार तैयार करने के तौर-तरीकों में बदलाव कर चुका हूँ। वहीं, खेती में भी बीजोपचार के साथ उन्नत बीजों का प्रयोग शुरू किया है। अब वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में सब्जी फसलो की ओर कदम बढ़ा रहा हूँ। आगामी रोपाई सीजन से सब्जी फसलों का श्री गणेश करूंगा।

स्टोरी इनपुटः डॉ. सीएम यादव,
डॉ. केसी नागर, केवीके, शाहपुरा

पहले परम्परागत तौर-तरीकों से फसल का उत्पादन लेता था। लेकिन, अब कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़कर खेती के तौर-तरीकों में भी बदलाव कर रहा है। पशुआहार पर ध्यान देने से दुग्ध की धार भी बढ़ी है। उन्होंने बताया कि पशु स्वास्थ्य के प्रति मैं काफी सतर्क रहता हूं। साल में दो बार पशु चिकित्सकों से पशुओं का चैकअप करवाता हूं। पशुपालन को रोजगार

पानी सूखने के बाद झोपड़ी से उजाले की ओर

कल्याण सहाय
मो. : 85599-20539

संघर्ष का रंग एक दिन जरूर निखरता है। किसान कल्याण सहाय का संघर्ष भी कम नही है। इस किसान ने विज्ञान से स्नातक करने के बाद जिंस कारोबार किया। इसके बाद परम्परागत फसलो के उत्पादन से जुड़ गया। लेकिन, समय के साथ पानी रसातल समां गया। इस कारण अब टैंकर के पानी से सिंचाई करके खेती को जिंदा रखें हुए है। किसान कल्याण ने बताया कि पानी पाताल समाने के बाद से उर्वरक और पेस्टीसाइड्स का प्रयोग बंद कर दिया है। वहीं, आय बढाने के लिए अब झोपड़ी से अंधेरो से जीवन के उजाले की ओर बढ़ रहा हूँ। गौरतलब है कि किसान कल्याण पिछले दो साल से ऑयस्टर मशरूम का उत्पादन ले रहे है। इस तरह खेती से सालाना 2 से ढ़ाई लाख रूपए की आमदनी इनकों मिल रही है।

पीतमपुरा, जयपुर। अंधेरे से उजाला की ओर बढने का नाम है मशरूम। जी हां, झोपड़ी में राम और दाम लाने का इससे अच्छा, सरल और सुगम कोई दूसरा रास्ता नहीं है। एक बार तकनीक समझ आ जाएं तो जीवन के साथ-साथ स्वास्थ्य में भी नई तरोताजगी और चमक देखने को मिलती है। जैविक खेती के बाद मशरूम में सफलता का परचम लहराने वाले ऐसे ही किसान है कल्याण सहाय शर्मा। जो टैंकर के पानी के जरिए परम्परागत फसलों का उत्पादन ले रहे है। वहीं, पिछले दो साल से ऑयस्टर मशरूम का उत्पादन लेकर अच्छी आमदनी कमा रहे है। किसान कल्याण सहाय ने हलधर टाइम्स को बताया कि मेरे पास 9 बीघा पक्की जमीन है। वर्ष 1982 में विज्ञान से स्नातक करने के बाद जिंस का कारोबार करने लगा। लेकिन, बाद में खेती से जुड़ गया। जमीन में पानी रहने तक सभी फसलों की बेहत्तर पैदावार होती थी। लेकिन, अब 1100 फीट पर भी पानी नहीं है। इस कारण परम्परागत फसलों का उत्पादन लेना भी मुश्किल हो चला है। किसान होने के नाते जमीन को अपने हाल भी नहीं छोड़ सकते। इस कारण कम जल मांग वाली और जल्दी तैयार होने वाली बरसाती फसलों का उत्पादन लेता हूँ। रबी फसलो की सिंचाई टैंकर के पानी पर आधारित है। उन्होंने बताया कि पानी के रसातल समाने के बाद से ही उर्वरक और कीटनाशी का खेतों में उपयोग बंद कर दिया है। इस कारण खेतों में उत्पादित फसलें स्वत: ही जैविक हो चली है। उन्होंने बताया कि पररम्परागत फसलों में बाजरा, मूंग, मोठ, सरसों, ग्वार का उत्पादन लेता हूँ। उन्होने बताया कि खेती में रसायन का उपयोग नहीं करने के कारण बाजरे की फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य से ज्यादा दाम मिलते है। बाजरे की बिक्री तीन हजार रूपए प्रति क्विंटल की दर से कर रहा हूँ। जैविक उत्पादन के लिए जीवामृत, घन जीवामृत, अमृतपानी सहित दूसरे जैव कीटनाशक स्वयं तैयार कर रहा हूँ।

घट गया खर्च

उन्होंने बताया कि जैविक सब्जी उत्पादन से परिवार के पोषण स्तर में सुधार हुआ है। साथ ही, खाद, दवा पर होने वाला खर्च शून्य हो चुका है। मृदा गोबर खाद, केंचुआ खाद, कम्पोस्ट, हरी खाद, नीम-करंज खली, पंचगव्य, जीवामृत, घनजीवामृत, वानस्पतिक काढ़ा, नीम तेल आदि के प्रयोग से जमीन के साथ-साथ फसल की गुणवत्ता भी काफी बढ़ चुकी है। उन्होंने कहा कि जैविक खेती से जुड़ने के बाद फसल के उत्पादन में बढौत्तरी दर्ज हुई है।

दो साल से आयस्टर

उन्होने बताया कि आईएचआईटीसी दुर्गापुरा से मशरूम उत्पादन का प्रशिक्षण लिया है। इसके बाद से ही आयस्टर मशरूम का उत्पादन ले रहा हूँ। उन्होंने बताया कि वर्तमान में ऑयस्टर की तीन तुड़ाई कर चुका हूँ। उन्होंने बताया कि उत्पादित मशरूम से प्रोटीन पाउड़र तैयार करके बिक्री कर रहा हूँ। इससे आमदनी थोड़ी ज्यादा मिल रही है।

नींबू-नेपियर से भी आय

उन्होंने बताया कि आय बढ़ाने के लिए नींबू का बगीचा भी लगाया हुआ है। लेकिन, गर्मी के समय गर्म हवाओं से पौधों पर फॉल बचाना मुश्किल हो जाता है। नींबू के 140 से ज्यादा पेड़ मेरे पास है। इनसे सालाना 40-50 हजार रूपए की आमदनी मिल जाती है। वहीं, एक बीघा क्षेत्र में नेपियर घास लगाई हुई है। इसके विपणन से भी लाख रूपए मिल जाते है।

पशुधन से आय

उन्होंने बताया कि पशुधन में मेरे पास 5 गाय और एक भैंस है। प्रतिदिन 10-12 लीटर दुग्ध का उत्पादन मिल रहा है। इसमें से 7-8 लीटर दुग्ध की बिक्री डेयरी को कर देता हूँ। गिर गाय के दुग्ध का विपणन 60 रूपए प्रति किलोकी दर से कर रहा हूँ। उन्होने बताया कि पशुधन के अपशिष्ट से वर्मी कम्पोस्ट खाद तैयार कर रहा हूँ। इससे भी थोड़ी बहुत आय मिल जाती है। पशुपालन से मासिक तीन से चार हजार रूपए की बचत मिल जाती है।

स्टोरी इनपुटः सत्यनारायण चौधरी,
चीफ ट्रेनर, आईएचआईटीसी, जयपुर

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक शरद शर्मा के द्वारा अम्बर ऑफसेट प्रा. लि., डी.एल. टॉवर, 3-ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर से मुद्रित एवं सी-17, पुरोहित जी का बास, सरकारी मिडिल स्कूल के पास, 22 गोदाम, जयपुर-302006 से प्रकाशित।
संपादक : शरद शर्मा। फोन : 0141-4021593, फैक्स : 0141-2213100, ईमेल : haldhartimes@gmail.com or rediffmail.com (सभी मामलों का न्याय क्षेत्र जयपुर)